A-PDF PageMaster Demo. Purchase from www.A-PDF.com to remove the watermark

विश्व हिंदी समाचार

(विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक प्रकाशन)

www.vishwahindi.com

वर्ष : 6 | अंक : 22 | जून, 2013

हिंदी शिक्षण के लिए महात्मा गांधी संस्थान और सें देनी के बीच संधि पर हस्ताक्षर

दाएँ से शिक्षा मंत्री डॉ. वसंत कुमार बनवारी, विजय मधु, सें देनी के मेयर श्री गिल्बर्ट एनेट तथा एम.जी.आई.-आर.टी.आई. परिषद् के अध्यक्ष रवींद्रनाथ द्वारका

4 अप्रैल 2013 को मॉरीशस के शिक्षा व मानव संसाधन मंत्री माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी की उपस्थिति में महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस के महानिदेशक श्री बिजय कुमार मधु तथा सें देनी, रियूनियन (St. Denis, Reunion) का प्रतिनिधित्व करते हुए उसके मेयर श्री गिल्बर्ट एनेट ने महत्वपूर्ण समझौते पर हस्ताक्षर किये। समझौते का उद्देश्य है हिंदी भाषा के क्षेत्र में मॉरीशस और रियूनियन के बीच घनिष्ठ सहयोग की स्थापना करना।

शेष पृ.2

लन्दन में यू.के. हिंदी समिति द्वारा 12वीं हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता संपन्न

12 वें हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण समारोह

ब्रिटेन में यू.के. हिंदी समिति द्वारा भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, अक्षरम् और प्रवासी दुनिया के सहयोग से हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। भारत को जानने-समझने के सपने को पूरा करने में इस का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। ब्रिटेन, हंगरी, रुमानिया, बल्गारिया, रूस, उज़बेकिस्तान, आयरलैंड, पोलेंड जैसे देश में हिंदी के विद्यार्थियों के लिए निरंतर 12वें वर्ष के लिए यह प्रतियोगिता चल रही है और विस्तार पा रही है।

शेष पृ.4

मॉरीशस में हिंदी संगठन द्वारा हिंदी पुस्तक मेला

विश्व पुस्तक दिवस के उपलक्ष्य पर मॉरीशस में हिंदी संगठन (हिंदी स्पीकिंग यूनियन) द्वारा पुस्तक मेले का आयोजन किया गया। यह मेला एक बिक्री-प्रदर्शनी के रूप में देश के कोने-कोने में लगाया गया।

शेष पृ.9

मॉरीशस के इंद्रधनुष सांस्कृतिक परिषद् द्वारा चित्र प्रदर्शनी, पत्रकारिता पर संगोष्ठी तथा पुस्तक एवं पत्रिका लोकार्पण

बाएँ से निजी संसदीय सचिव श्रीमती प्रतिभा भोला, श्रीमती शकुन्तला बुलेल, मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम श्री राजकेश्वर प्रयाग, श्री प्रह्लाद रामशरण, श्री ज्ञानदत्त गोपी तथा श्री ईवान मार्शियाल

मॉरीशस में पं.आत्माराम विश्वनाथ के आगमन की शताब्दी और आर्य समाज की स्थापना के उपलक्ष्य में इंद्रधनुष सांस्कृतिक परिषद ने शुक्रवार 26 तथा शनिवार 27 अप्रैल, 2013 को आर्य सभा मॉरीशस तथा देश के विभिन्न सामाजिक-धार्मिक व सांस्कृतिक संस्थाओं के संयुक्त तत्वावधान में आर्य भवन, पोर्ट लुईस में दो दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया।

शेष पृ.3

नॉर्थ कैरोलाइना में हास्य कवि सम्मेलन

13 अप्रैल को हिंदू सोसाइटी, मोर्रिस्विल्ले के सांस्कृतिक भवन के प्रांगण में अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति एवं हिंदी विकास मंडल के तत्वावधान में हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ।

शेष पृ.4

वियतनाम में हुआ पहले हिंदी वियतनामी शब्दकोश का लोकार्पण

वियतनाम में हिंदी के लिए समर्पित प्राध्यापक श्रीमती साधना सक्सेना और उनके एक विद्यार्थी फेम दिन हयूआंग ने मिलकर वियतनाम में हिंदी सीखने वाले सैकड़ों विद्यार्थियों के लिए हिंदी वियतनामी का एक विशाल शब्दकोश तैयार किया है। वियतनाम स्थित भारतीय दूतावास के सहयोग से बने इस शब्दकोश का लोकार्पण पिछले दिनों वियतनाम के हो ची मिल विश्वविद्यालय में हुआ।

शेष पृ.5

विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा
‘अंतर्राष्ट्रीय हिंदी कविता प्रतियोगिता’

विश्व हिंदी दिवस 2014 के उपलक्ष्य में विश्व हिंदी सचिवालय बहुत जल्द एक ‘अंतर्राष्ट्रीय हिंदी कविता प्रतियोगिता’ आयोजित करने जा रहा है। इसपर विस्तृत जानकारी शीघ्र ही सचिवालय के वेबसाइट www.vishwahindi.com पर उपलब्ध कराई जाएगी तथा ईमेल द्वारा प्रेषित की जाएगी।

हिंदी शिक्षण के लिए महात्मा गांधी संस्थान और सें देनी के बीच संधि पर हस्ताक्षर

दाएँ से दूसरे शिक्षा मंत्री डॉ. वसंत कुमार बनवारी के साथ रेयूनियन एवं महात्मा गांधी संस्थान के प्रतिनिधि मंडल

वैश्विक स्तर पर विशेषकर फ्रेंच भाषी समाज के मध्य मॉरीशस की महत्वपूर्ण भूमिका की दृष्टि से 4 अप्रैल 2013 ऐतिहासिक तिथि के रूप में माना जा सकता है। इसी दिन मॉरीशस के शिक्षा व मानव संसाधन मंत्री माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी की उपस्थिति में महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस के महानिदेशक श्री बिजय कुमार मधु तथा सें देनी, रियूनियन (St. Denis, Reunion) का प्रतिनिधित्व करते हुए उसके मेयर श्री गिल्बर्ट एनेट ने महत्वपूर्ण समझौते पर हस्ताक्षर किये। समझौते का उद्देश्य है हिंदी भाषा के क्षेत्र में मॉरीशस और रियूनियन के बीच घनिष्ठ सहयोग की स्थापना करना।

सें देनी, रियूनियन के मेयर श्री गिल्बर्ट एनेट

समझौते के अनुरूप, अगस्त 2013 से महात्मा गांधी संस्थान, सें देनी में पांच-सप्ताह का एक प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू करने जा रहा है जिससे सें देनी में कार्यरत हिंदी शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाएगा और विद्यार्थियों को हिंदी के साथ-साथ भारतीय संस्कृति का ज्ञान भी दिया जाएगा जिससे वे हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति को बेहतर समझ पाएँ तथा विश्व नागरिकों के रूप में अपनी भूमिका निभा पाएँ।

शिक्षा व मानव संसाधन मंत्री का यह मानना है कि यह समझौता शिक्षण के क्षेत्र में दोनों देशों के बीच स्थापित संबंध को सुदृढ़ बनाएगा साथ ही इससे उस भारतीय सांस्कृतिक विरासत को अपना अपेक्षित महत्व प्राप्त होगा जो रियूनियन टापू की 40 प्रतिशत जनता को जोड़ती है। माननीय मंत्री जी ने प्राथमिक स्कूल में हिंदी सहित विभिन्न एशियाई भाषाओं की पढ़ाई की भी चर्चा की।

अपने संदेश में महात्मा गांधी संस्थान के महानिदेशक, श्री बिजय कुमार मधु ने कहा कि भाषा संस्कृति की वाहिका है इसलिए भाषा का प्रचार करने वाली प्रत्येक पहल में सहयोग अनिवार्य है। श्री मधु के विचार से इस परियोजना की प्रेरणा शक्ति दोनों देशों में आपसी संबंधों को सुदृढ़ बनाने की इच्छा से प्राप्त हुई है। दोनों पक्षों द्वारा अंतर्सांस्कृतिक समझबूझ को बढ़ावा देने के लिए किए जा रहे प्रयासों में साझेदारी स्थापित करने की इच्छा भी इस उत्साह को बढ़ाती है। अंतर्सांस्कृतिक समझबूझ जो कि शिक्षा में एक अनिवार्य तत्व है। उनके अनुसार इस समझौते से हिंदी भाषा शिक्षण के क्षेत्र में दोनों देशों की योग्यताओं का एकत्रित होने का अवसर प्राप्त होगा।

श्री मधु ने यह घोषणा भी की कि महात्मा गांधी संस्थान एक अनुवाद केंद्र स्थापित करने की इच्छा रखता है ताकि हिंदी की साहित्यिक कृतियों का फ्रेंच में तथा फ्रेंच साहित्यिक कृतियों का हिंदी में अनुवाद किया जा सके जिससे अधिकाधिक पाठक गण हिंदी और फ्रेंच साहित्य का लाभ उठा सकें।

सें देनी के मेयर ने कहा कि वे एक भाषा संस्थान स्थापित करने की इच्छा रखते हैं और यह समझौता युवकों को विश्व नागरिक बनाने में सहायक बनेगा। उनके अनुसार इस समझौते से छात्रों के शिक्षण और शिक्षकों के प्रशिक्षण का उन्नयन हो पाएगा और वे वैश्विक अर्थ-व्यवस्था तथा बहु-सांस्कृतिक समाज के निर्माण में बेहतर समझ के साथ अपना योगदान दे पाएँगे। मेयर एनेट ने इस बात पर बल डाला कि यह समझौता हिंदी भाषा के वैश्विक महत्व की पहचान को रेखांकित करता है। हिंदी भाषा जो कि आज विश्व में 50 करोड़ से अधिक लोगों द्वारा बोली जाती है, जो व्यक्तियों और राष्ट्रों के बीच संप्रेषण का उत्तम साधन है।

रियूनियन में इस प्रशिक्षण के लिए महात्मा गांधी संस्थान की ओर से वरिष्ठ प्राध्यापिका, डॉ.राजरानी गोबिन को नियुक्त किया गया है। डॉ.गोबिन के साथ हुए साक्षात्कार के दौरान इस समझौते के उद्देश्य तथा प्रशिक्षण की तैयारियों के बारे में उन्होंने कहा कि सें देनी नगरपालिका की योजनाओं में से एक प्रमुख योजना शिक्षा का प्रचार-प्रसार है। शिक्षा के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से ही इस वर्ष सें देनी की नगरपालिका ने यह निर्णय लिया है कि रियूनियन की कुछ पाठशालाओं में हिंदी और मन्दारिन को विदेशी भाषा के रूप में पढ़ाया जाए।

डॉ.गोबिन के अनुसार हालाँकि रियूनियन में बड़ी मात्रा में दक्षिण भारतीय मूल के लोग बसते हैं और फ्रेंच बोलते हैं, फ़िर भी उन्होंने हिंदी का चयन किया क्योंकि हिंदी के प्रति उनका लगाव व प्रेम अधिक है।

इसी संदर्भ में इस परियोजना के कार्यान्वयन हेतु सें देनी ने महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस के साथ समझौते पर हस्ताक्षर किए। अब सें देनी में शिक्षकों को एक महीने का प्रशिक्षण दिया जाएगा ताकि वे वहाँ की पाठशालाओं में हिंदी पढ़ा सकें। अब तक लगभग 8 शिक्षकों की नियुक्ति हो चुकी है। यह नियुक्ति इस आधार पर की गई है कि शिक्षकों को फ्रेंच और हिंदी दोनों भाषाओं का अच्छा जानकार होना चाहिए क्योंकि उन्हें फ्रेंच माध्यम से हिंदी भाषा पढ़ाना होगा। डॉ.राजरानी गोबिन का कहना है कि मॉरीशस में हम क्या पद्धति अपनाते हैं और उस विशिष्ट संदर्भ में, रियूनियन के संदर्भ में क्या पद्धति है, इन सबको ध्यान में रखते हुए उनको विधि सिखाएँगे। पाठशालाओं में हिंदी की पढ़ाई माध्यमिक स्तर से शुरू की जा रही है। जो कि अनके अनुसार उचित भी है क्योंकि इसी उम्र में बच्चों की जिज्ञासा अधिक होती है।

ध्यातव्य है कि हिंद महासागर स्थित फ्रांस प्रशासित रियूनियन टापू में 40 प्रतिशत जनता भारतीय मूल की हैं और वहाँ फ्रेंच भाषा ही प्रचलित है। विश्व में फ्रेंच एक महत्वपूर्ण भाषा के रूप में मानी जाती है और आज फ्रेंच भाषी अथवा फ्रांकोफ़ोन समुदाय संख्या की दृष्टि से विश्व के महत्वपूर्ण भाषिक समुदायों में से एक है। इस समुदाय में हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने वाली इस पहल के लिए रियूनियन के मेयर तथा महात्मा गांधी संस्थान को विश्व हिंदी सचिवालय की ओर से बधाई एवं शुभकामनाएँ।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

महात्मा गांधी संस्थान के भाषा संसाधन केंद्र द्वारा एशियाई भाषाओं की पुस्तकें और मल्टीमीडिया सी.डी. का लोकार्पण

महात्मा गांधी संस्थान के श्री मोता और भाषा संसाधन केंद्र के अध्यक्ष श्री कुमारदत्त गुदारी सहित अन्य सहयोगी

24 मई, 2013 को महात्मा गांधी संस्थान के सुब्रमण्यं भारती सभागार में शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री डॉ. वसंत कुमार बनवारी की उपस्थिति में फ़ॉर्म 4 के छात्रों के लिए एशियाई भाषाओं की पाठ्य पुस्तकों तथा मल्टीमीडिया सी.डी. का लोकार्पण किया गया। संस्था के भाषा संसाधन केंद्र द्वारा हिंदी, उर्दू, तमिल, तेलुगु, मराठी तथा चीनी भाषाओं में ये पाठ्य पुस्तकें तैयार की गई हैं।

अपने भाषण में मंत्री डॉ. वसंत कुमार बनवारी ने इस पहल की सराहना की और कहा कि इन शैक्षणिक सामग्रियों के माध्यम से छात्रों को भारतीय भाषाएँ तथा चीनी भाषा सीखने में अधिक सुविधा होगी। डॉ.वसंत कुमार बनवारी ने विश्वास जताया कि ये पाठ्य पुस्तकें भाषा पढ़ने वाले छात्रों की बढ़ती संख्या के लिए लाभप्रद् होंगीं। पुस्तकों के ओडियो संस्करण, जो सी.डी. के रूप में उपलब्ध हैं; इनसे ई-विद्या को बढ़ावा मिलेगा तथा छात्रों को पठन के साथ-साथ श्रवण व वाचन कौशलों के विकास में भी सहायता प्राप्त होगी। शिक्षा मंत्री ने बताया कि पुस्तकों में जलवायु परिवर्तन, तीज-त्योहार, खेल-कूद, विज्ञान आदि विषय हैं जो पाठशालाओं के पाठ्यक्रमों में शामिल हैं। उन्होंने सरकार के विज़न की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए शिक्षण के माध्यम से सुसंस्कृत समाज का निर्माण करने पर बल दिया।

महात्मा गांधी संस्थान में भाषा संसाधन केंद्र की स्थापना अगस्त 2006 में महात्मा गांधी संस्थान एवं केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर के बीच एक संधि के बाद हुई थी। भाषा संसाधन केंद्र के तीन प्रमुख स्तंभ हैं – भाषा अध्यापन, भाषा शिक्षण-अध्ययन के लिए नए उपकरणों का विकास और नीति निर्माताओं, भाषा योजनाकारों व भाषा उपयोगकर्ताओं की आवश्यकता अनुसार शोध-कार्य। भाषा संसाधन केंद्र द्वारा हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं की पाठ्य पुस्तकें व सहायक सामग्री देश में माध्यमिक स्तर पर इन भाषाओं के शिक्षण को अधिक से अधिक आधुनिक तथा सुगम बनाने के उद्देश्य से की गई है।

लोकार्पण समारोह में महात्मा गांधी संस्थान के महानिदेशक, श्री बिजय मधु, श्री रवीन्द्रनाथ द्वारका तथा भाषा संसाधन केंद्र के अध्यक्ष श्री कुमारदत्त गुदारी भी उपस्थिति थे।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

पं. आत्माराम विश्वनाथ मॉरीशस आगमन शताब्दी समारोह चित्र प्रदर्शनी, पत्रकारिता पर संगोष्ठी तथा लोकार्पण समारोह

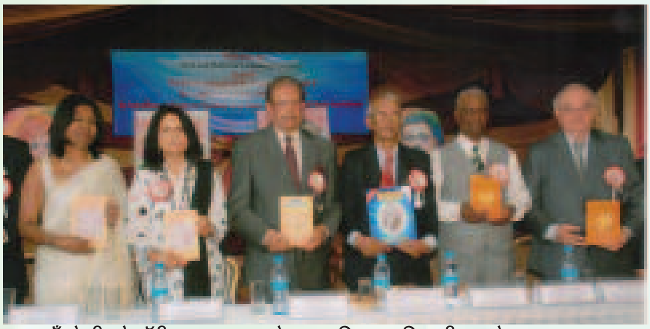

बाएँ से तीसरे मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम श्री राजकेश्वर प्रयाग द्वारा पुस्तक व पत्रिका लोकार्पण

मॉरीशस में पं.आत्माराम विश्वनाथ के आगमन की शताब्दी के उपलक्ष्य में इंद्रधनुष सांस्कृतिक परिषद ने शुक्रवार 26 तथा शनिवार 27 अप्रैल, 2013 को विश्व हिंदी सचिवालय, आर्य सभा मॉरीशस तथा देश के विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, शैक्षिक व भाषा प्रचारक संस्थाओं के सहयोग से आर्य भवन, पोर्ट लुईस में दो दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम में मॉरीशस में हिंदी पत्रकारिता तथा बहुजातीय, बहु-भाषी व बहुसांस्कृतिक समाज में पत्रकारिता विषयों पर आधारित एक दिवसीय संगोष्ठी, लोकार्पण समारोह तथा इनके समानांतर चलने वाली एक पुस्तक-चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें मॉरीशस के साहित्यकारों, इतिहासकारों तथा सामाजिक-सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं आदि के चित्र सहित पुरानी हिंदी पत्र-पत्रिकाएँ शामिल थीं।

पुस्तक-चित्र प्रदर्शनी

शुक्रवार 26 को मुख्य अतिथि कला एवं संस्कृति मंत्री मुकेश्वर चुनी ने कार्यक्रम का उद्‌घाटन किया। इंद्रधनुष सांस्कृतिक परिषद् के अध्यक्ष श्री प्रह्लाद रामशरण के स्वागत भाषण के पश्चात मंत्री मुकेश्वर चुनी ने अपना संदेश दिया। मॉरीशस में पत्रकार, इतिहासकार तथा हिंदी लेखक पं.आत्माराम विश्वनाथ के मॉरीशस आगमन के 100 वर्ष को याद करते हुए उन्होंने बताया कि आज के समाज में पत्रकारिता की आवश्यकता कितनी बढ़ गई है। मॉरीशस में पत्रकारिता के इतिहास, उसके लक्ष्य, संकल्प आदि पर भी मंत्री ने बात की। उन्होंने इस आयोजन के लिए इंद्रधनुष सांस्कृतिक परिषद, आर्य सभा तथा अन्य संस्थाओं को शुभकामनाएँ दीं।

इंद्रधनुष सांस्कृतिक परिषद् के प्रधान प्रह्लाद रामशरण ने बताया कि मॉरीशस में हिंदी को बढ़ावा देने में चार महान व्यक्तियों का योगदान रहा है – स्वामी दयानंद, महात्मा गांधी, मणिलाल डॉक्टर तथा पं.आत्माराम विश्वनाथ। उन्होंने बताया कि अनेक विसंगतियों के बावजूद हिंदी का प्रचार-प्रसार होता रहा जिसमें 'यंग मैन हिंदू एसोसियेशन', मॉरीशस आर्य समाज आदि कई संस्थाओं का योगदान रहा है।

दो सत्रों में विभाजित संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता रामायण केंद्र के प्रधान पं. राजेंद्र अरुण ने की। इसमें महात्मा गांधी संस्थान में वसंत/रिमझिम पत्रिकाओं के वरिष्ठ संपादक श्री राज हीरामन ने दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक एवं वार्षिक पत्र-पत्रिकाओं के संपादकीय लिखने के तरीकों पर अपने विचार व्यक्त किए। प्रह्लाद रामशरण ने हिंदुस्तानी पत्र के प्रकाशन पर बात की तथा आर्य सभा के प्रधान श्री रामधोनी जी ने हिंदी पत्र-पत्रिकाओं को इंटरनेट के माध्यम से प्रसारित करने पर बल दिया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री ईवान मार्शियाल (सह संपादक – इंद्रधनुष एवं 'रिपोर्टरी ऑफ़ मॉरीशन प्रेस' के निदेशक) ने की। उन्होंने पत्रकारिता की आवश्यकता तथा मॉरीशस में पत्रकारिता के इतिहास पर नज़र दौड़ाई जिसमें आद्रियें देपिने, महात्मा गांधी, मणिलाल डॉक्टर, काशीनाथ किश्टो, सुखदेव विष्णुदयाल, जय नारायण रॉय, सर शिवसागर रामगुलाम आदि हस्तियों ने अहम भूमिका निभाई। पत्रकार श्री शोभानंद सीपरसाद ने पत्रकार के दायित्वों पर अपने विचार प्रकट किये। 'ले देफ़ी मीडिया ग्रुप' के श्री प्रदीप देबी ने प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पत्रकारिता और सूचनाओं की विश्वसनीयता पर बात की। 'ला सॉंचिनैल' में 'पोलो पत्रिका' की संपादक श्रीमती इज़ाबेल मोत्चान-ब्रें ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तथा जनता के प्रति पत्रकार के दायित्वों पर प्रकाश डाला। 'ले माचिनाल' के प्रबंध संपादक श्री रॉय के अनुसार यह जानना आवश्यक है कि सूचना क्या है, और इसके कौन से अंग होते हैं। यह भी जानना आवश्यक है कि पाठकों को क्या पसंद आएगा तथा क्या रोचक लगेगा। उनके शब्दों में पत्रकार के रूप में लिखते वक्त हम अपना धर्म, निजी जीवन, विश्वास, आस्था आदि सब कुछ भुलाकर ही लिखते हैं। यह एक ऐसा कार्य है जिसमें बहुत त्याग की आवश्यकता होती है।

रिपोर्टरी ऑफ़ मॉरीशन प्रेस' के निदेशक तथा इंद्रधनुष पत्रिका के सह-संपादक श्री ईवान मॉशिआल

दूसरे सत्र के अन्त में श्री गंगाधरसिंह सुखलाल ने संगोष्ठी में सक्रिय रूप से भाग लेने वाले पत्रकारों को धन्यवाद दिया। उन्होंने अपनी संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की और श्रोताओं को बताया कि प्रस्ताव रूप में एक हिंदी साप्ताहिक पत्र निकालना ही संगोष्ठी का मुख्य उद्‌देश्य रहा है।

प्रदर्शनी में उपलब्ध पुरानी हिंदी पत्र-पत्रिकाएँ; साहित्यकारों, इतिहासकारों तथा सामाजिक-सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं आदि के चित्र

पुस्तक एवं पत्रिका का लोकार्पण समारोह

शनिवार 27 अप्रैल को आर्य भवन, पोर्ट लुइस के मोहनलाल मोहित सभागार में मुख्य अतिथि महामहिम श्री राजकेश्वर प्रयाग, मॉरीशस के राष्ट्रपति, निजी संसदीय सचिव, माननीय प्रतिभा भोला, आर्य सभा के प्रधान श्री हरिदेव रामधनी, शकुन्तला बुलेल, प्रह्लाद रामशरण, इवान मार्शियाल, ज्ञानदत्त गोपी और इन्द्रदत्त चन्नू सहित अनेक महानुभाव उपस्थित थे।

मॉरीशस के राष्ट्रपति महामहिम राजकेश्वर प्रयाग ने अपने वक्तव्य में चार ग्रन्थों के लेखक तथा 'इन्द्रधनुष' पत्रिका के संपादक, प्रह्लाद रामशरण के उत्तम कार्यों के लिए उन्हें हार्दिक बधाई दी। उन्होंने बताया कि आज समाज में अनेक बुराइयाँ पायी जाती हैं और उन्हें दूर करने के लिए पं.आत्माराम विश्वनाथ जैसे सुधारक के पग पर चल कर ही देश और समाज को बचाया जा सकता है। समारोह में महामहिम राष्ट्रपति ने बारी-बारी से प्रह्लाद रामशरण द्वारा अंग्रेज़ी में अनूदित एवं संपादित पं.आत्माराम विश्वनाथ की 'मॉरीशस का इतिहास' एवं 'हिंदू मॉरीशस', प्रह्लाद रामशरण द्वारा लिखित 'मॉरीशसीय आर्य समाज की विभूतियाँ', पं.जीवन महादेव द्वारा संपादित डी.रामरतन की पुस्तक 'मानव जीवन का उद्‌देश्य' एवं पं.आत्माराम विश्वनाथ पर त्रिभाषीय इंद्रधनुष पत्रिका के विशेषांक का लोकार्पण किया।

प्रह्लाद रामशरण ने अपने वक्तव्य में बताया कि पं.आत्माराम ने अपने मॉरीशस प्रवास-काल (1912-1955) के दौरान बारी-बारी से 'हिन्दुस्तानी', 'आर्य पत्रिका', 'आर्य वीर-जागृति' तथा 'आर्योदय' आदि का संपादन करके, स्थानीय हिंदी पत्रकारिता को एक नई दिशा देकर, एक उज्ज्वल कीर्तिमान स्थापित किया है।

डॉ.शकुन्तला बुलेल ने पं.आत्माराम विश्वनाथ जैसे सशक्त लेखक एवं इतिहासकार के जीवन एवं कृतित्व को सामने लाने में 'इन्द्रधनुष' पत्रिका के सम्पादक, लेखक तथा शोधकार, प्रह्लाद रामशरण के योगदान को उजागर किया। आर्य सभा के प्रधान, श्री हरिदेव रामधनी ने दुर्गाप्रसाद रामरतन की पुस्तक 'मानव जीवन का उद्‌देश्य' की चर्चा की। श्रीमान इवान माशियाल ने अपने भाषण में पं.आत्माराम विश्वनाथ के सुधारवादी विचारों का उल्लेख करते हुए उनके कार्यों की प्रशंसा की।

अन्त में डॉ.इन्द्रदत्त चन्नू ने अपने लघु वक्तव्य में उपस्थित विशिष्ट अतिथियों के साथ-साथ, महोत्सव को सफ़ल बनाने वाले व्यक्तियों एवं संस्थाओं को धन्यवाद दिया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

लन्दन में यू.के. हिंदी समिति द्वारा 12वीं हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता संपन्न

गणमान्य अतिथियों द्वारा पुरस्कार वितरण

अगली पीढ़ी तक हिंदी पहुँचाने के लिए वैश्विक स्तर पर जो प्रयास हो रहे हैं, उनमें सर्वाधिक व्यापक, महत्वपूर्ण प्रयास ब्रिटेन में यू.के. हिंदी समिति द्वारा भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, अक्षरम् और प्रवासी दुनिया के सहयोग से किया जा रहा है। हिंदी के विद्यार्थियों के भारत को जानने-समझने के सपने को पूरा करने में इस आयोजन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यू.के. हिंदी समिति के अध्यक्ष डॉ. पद्मेश गुप्त, वेद मोहला और सुलेखा चोपला के समर्पण भाव के कारण ही ब्रिटेन, हंगरी, रुमानिया, बल्गारिया, रूस, उज़बेकिस्तान, आयरलैंड, पोलेंड जैसे देश में निरंतर 12वें वर्ष के लिए यह प्रतियोगिता निरंतर चल रही है और विस्तार पा रही है।

5 मई 2013 को लन्दन में यू.के. हिंदी समिति द्वारा 12वीं हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन भारतीय उच्चायोग लन्दन के तत्वावधान में ब्रह्म ऋषि मिशन के आश्रम में संपन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारतीय उच्चायोग के हिंदी एवं संस्कृति अधिकारी श्री बिनोद कुमार ने इस अवसर पर कुछ बहुमूल्य सुझावों के साथ भारतीय उच्चायोग के सक्रिय सहयोग को भविष्य में भी जारी रखने का आश्वासन दिया।

ब्रिटेन के वरिष्ठ लेखक डॉ.सत्येन्द्र श्रीवास्तव ने बच्चों की अच्छी परवरिश में माताओं के योगदान और महत्व की चर्चा की। लन्दन के वरिष्ठ पत्रकार श्री ललित मोहन जोशी ने कहा कि भाग लेने वाले अधिकांश बच्चों के उच्चारण शुद्ध और प्रभावशाली थे। ब्रह्म ऋषि मिशन की प्रमुख विश्व भारती दीदी ने मिशन के इतिहास एवं हिंदी के प्रचार-प्रसार में संस्था की भूमिका पर प्रकाश डाला। डॉ.पद्मेश गुप्त ने हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता के इतिहास और रूपरेखा बताते हुए युरोप में इस प्रतियोगिता के बढ़ते प्रभाव की जानकारी दी। इसके माध्यम से युरोप के हिंदी विद्यार्थियों को भारत जाने का अवसर मिलता है और विश्व में युवाओं का बहुत बड़ा नेटवर्क तैयार हो रहा है।

प्रतियोगिता की संयोजिका सुरेखा चोपला ने सभी शिक्षकों और हिंदी केन्द्रों को धन्यवाद अर्पित किया जो पूरी निष्ठा के साथ हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता में भाग ले रही हैं। भाषण प्रतियोगिता का संचालन पूर्व में प्रतियोगिता के विजेता रही हिंदी छात्रा परनीत और ऋतु ने अत्यंत कुशलतापूर्वक किया। इस वर्ष भाषण प्रतियोगिता में 13 वर्ष की आयु से ऊपर के प्रथम विजेता रहे सिद्धार्थ सूद और द्वितीय रहे जमील गिब्सन। 12 वर्ष से कम आयु के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रही सरिका नेहा, वैदेही शर्मा तथा ख़ुशी शर्मा।

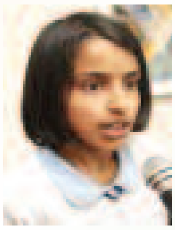

भारतीय उच्चायोग, लन्दन एवं विदेश मंत्रालय, भारत सरकार के सौजन्य से ब्रिटेन छात्रों को भारत यात्रा पर जाने का व्यय दिया जाता है। इस अवसर पर भारतीय उच्चायोग के श्री बिनोद कुमार, डॉ.श्याम मनोहर पाण्डेय, डॉ.सत्येन्द्र श्रीवास्तव एवं श्री सुदर्शन भाटिया ने प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार दिया। निर्णायक मण्डल के सदस्य थे ललित मोहन जोशी, ब्रिज गोयल, शिखा वार्ष्णेय, श्रीमती उषा राजे एवं इंदिरा आनन्द। हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता के मुख्य संरक्षक हैं विदेश मंत्रालय (भारत सरकार), भारतीय उच्चायोग (लन्दन), भारतीय सांस्कृतिक परिषद् (भारत सरकार), अक्षरम् (भारत), श्री महिपाल एवं श्रीमती जय वर्मा, श्री ब्रिज एवं श्रीमती उषा गोयल तथा डॉ.सत्येन्द्र श्रीवास्तव।

प्रवासी दुनिया से साभार

नॉर्थ कैरोलाइना में हास्य कवि सम्मेलन

कार्यक्रम के अध्यक्ष तथा कवि गण

पिट्सबर्ग, वाशिंगटन डीसी और रिचमंड से कवियों का आगमन नॉर्थ कैरोलाइना में हुआ। तनाव भरे जीवन में कुछ घंटे हँसी-मज़ाक के साथ बिताने के लिए नॉर्थ कैरोलाइना की जनता हर वर्ष हास्य कवि सम्मेलन की प्रतीक्षा करते हैं। 13 अप्रैल को हिंदू सोसाइटी, मोर्रिस्विल्ले के सांस्कृतिक भवन के प्रांगण में अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति एवं हिंदी विकास मंडल के तत्वावधान में हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ। डॉ.सुरेश अवस्थी, डॉ.कुँवर बेचैन और श्री दीपक गुप्ता की इस कवि सम्मेलन में भागीदारी थी। कवियों ने ऐसा समाँ बाँधा कि देर रात तक श्रोताओं के ठहाके लगते रहे और लोग कुँवर बेचैन के गीतों पर झूमते रहे।

इस सुरमई और हँसी की शाम का आरंभ दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। श्रीमती सरोज शर्मा, अध्यक्ष, हिंदी विकास मंडल, ने हिंदी विकास मंडल के बारे में बताकर बोर्ड के नए सदस्यों का परिचय दर्शकों को दिया। हिंदी के छात्रों ने सरस्वती वंदना से कवि सम्मेलन का आरंभ किया। इसके उपरांत अपने वक्तव्य में कवि सम्मेलनों की राष्ट्रीय संयोजक डॉ.सुधा ओम ढींगरा ने बताया कि समिति अमेरिका और कैनेडा में 18 कार्यक्रम करवा रही है और नॉर्थ नार्थ कैरोलाइना में यह चौथा कार्यक्रम है, इससे एकत्रित धन हिंदी के कार्यों के लिए प्रयोग किया जाता है। सुधा ओम ढींगरा ने कवियों का परिचय दिया और सरोज जी ने स्मृति चिह्न से उनका सम्मान किया।

तीन घंटे तक कवियों ने दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया। सुरेश जी और दीपक जी की व्यंग्य कविताओं की चुभन दर्शकों ने महसूस की और कुँवर जी के गीतों की गहराई में वे देर तक डूबे रहे।

इस वार्षिक गतिविधि में युवा पीढ़ी ने बढ़चढ़कर भाग लिया। पिछले तीन दशकों से अमेरिका की अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति हिंदी का प्रचार-प्रसार विभिन्न साधनों से कर रही है। हिंदी भाषियों को एक छत तले इकट्ठा कर भाषा के प्रति उनकी जिज्ञासा बढ़ाने में इन कवि सम्मेलनों का बहुत बड़ा योगदान है। वर्षों से हो रहे इन कवि सम्मेलनों का प्रभाव अब युवा पीढ़ी पर भी दिखाई दे रहा है। इन की सरल-सादी भाषा और हँसी-हँसी में दिये जा रहे संदेश युवा वर्ग को बहुत भाते हैं। अटल बिहारी वाजपेयी, प्रभा ठाकुर, सोम ठाकुर, उदय प्रताप सिंह, काका हाथरसी, बृजेंद्र अवस्थी, गोपाल दास नीरज, हुल्लड़ मुरादाबादी, अशोक चक्रधर और मंचीय कवियों की मुख्यधारा के लगभग सभी कवि इन कवि सम्मेलनों की शोभा बढ़ा चुके हैं।

इस बार कवि सम्मेलनों की श्रृंखला में डॉ.सुरेश अवस्थी, डॉ.कुँवर बेचैन एवं श्री दीपक गुप्ता की भागीदारी रही और ये पिट्सबर्ग, वाशिंगटन डीसी, रिचमंड वर्जिनिया, नॉर्थ कैरोलाइना, ह्यूस्टन, बॉस्टन, शिकागो, क्लीवलैंड आदि अठारह जगहों पर हुए। विदेशों में कवि सम्मेलन हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में बहुत सहायक सिद्ध हुए हैं।

अदिति मजूमदार तथा सुधा ओम ढींगरा की रिपोर्ट

लन्दन में वातायान काव्य-गोष्ठी

कवयित्री इंडिया रसेल द्वारा कवियों का सम्मान

19 मई को वातायान : काव्य साउथ बैंक ने हिंदी पत्रिका 'वागार्थ' के संपादक व प्रतिष्ठित कवि एकांत श्रीवास्तव के सम्मान में, भारतीय विद्या भवन, लंदन में एक विशेष काव्य गोष्ठी का आयोजन किया। एकांत जी यूरोप के एक दौरे पर हैं।

यू.के. हिंदी समिति और भारतीय विद्या भवन, लंदन के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम का आरंभ लेखक तथा ओरिएंटल स्टडीज़ विभाग, कम्ब्रिज विश्वविद्यालय के पूर्व रीडर, डॉ. सत्येन्द्र श्रीवास्तव की अध्यक्षता में हुई। अंग्रेज़ी कवयित्री इंडिया रसेल तथा जर्मन विद्वान और अनुवादक युटटा ऑस्टिन ने एक शाल और अभिनंदन पत्र द्वारा औपचारिक रूप से एकांत श्रीवास्तव का स्वागत किया। इस कार्यक्रम का संचालन यू.के. हिंदी समिति के अध्यक्ष, डॉ. पद्मेश गुप्त द्वारा वातायान की गतिविधियों पर एक दृश्य-श्रव्य प्रस्तुति के साथ किया गया।

कार्यक्रम का पहला भाग अंतर्राष्ट्रीय कविताओं को समर्पित रहा, जिसमें इंडिया रसेल ने अपनी अंग्रेज़ी कविता का पाठ किया जिसका हिंदी अनुवाद यूटटा ऑस्टिन ने प्रस्तुत किया। उन्होंने भी अपनी जर्मन कविता को हिंदी अनुवाद के साथ पढ़ा, वहीं भवन के निदेशक और कवि नंदकुमार ने अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ अपनी कन्नड़ कविता और कक्काकेसरी नटराजन ने अपनी मलयाली कविता का पाठ किया। उसके पश्चात डॉ. हिलाल फ़रीद, शैल अग्रवाल और मोहन राणा ने अपनी उर्दू व हिंदी कविताएँ सुनाई।

गोष्ठी का दूसरा भाग पूर्णतः एकांत श्रीवास्तव के नाम रहा। ''ये हैं मेरे शब्द'', ''धरती से कहूँगा धन्यवाद'' जैसी प्रकाशित पुस्तकों के लेखक एकांत श्रीवास्तव के संक्षिप्त परिचय के बाद उन्हें उनकी कविताएँ पढ़ने के लिए आमंत्रित किया गया, जिनमें से कुछ कविताओं का सुनीता जैन द्वारा किया गया अनुवाद फ़िल्मकार, लेखक चाँद चज्ज़ेल ने पढ़ा। एकांत जी की सहज और गहरे भाव वाली रचनाओं ने सभी श्रोताओं का मन मोह लिया।

कार्यक्रम का समापन वातायान की संस्थापक दिव्या माथुर ने उन सभी श्रोताओं को अपना धन्यवाद ज्ञापन देकर किया जो कार्यक्रम में शिरकत करने पहुंचे थे। उन्होंने भवन की टीम एवं वातायान की टीम के प्रति आभार व्यक्त किया। विशिष्ट अतिथियों में एशियाई अध्ययन विभाग ओरिएंटल विश्वविद्यालय नेपल्स के पूर्व रीडर डॉ.श्याम मनोहर पांडेय, कैलाश बुधवार, ''हैल्थ एंड हैप्पीनेस'' के संपादक विजय राणा, भरतनाट्यम नृत्य निर्देशक चित्रा सुंदरम्, लेखक डॉ. निखिल कौशिक, उषा राजे सक्सेना, कादम्बरी मेहरा, महेन्द्र दवेसर, इन्द्रा आनंद, सुरेखा चोफ्ला, कविता वाचक्नवी, शिखा वार्ष्णेय, तोशी अमृता और स्वाति भलोटिया आदि शामिल थे।

शिखा वार्ष्णेय की रिपोर्ट

येल विश्वविद्यालय में कथा गोष्ठी का आयोजन

सुषम बेदी सहित अन्य आयोजक तथा अतिथि गण

अप्रैल 2013 में येल विश्वविद्यालय में वहीं के दक्षिण एशियाई अध्ययन परिषद् और सीमा खुराना के सहयोग एवं सुषम बेदी के निर्देशन में कथा-गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें कई सम्मानित व नए कथाकारों ने भाग लिया। सुषम जी येल विश्वविद्यालय में राइटर इन रेज़िडेंस के तौर पर आमंत्रित थीं इसलिए इस बार वहीं पर कथा गोष्ठी हुई और गोष्ठी का विषय था 'डायस्पोरा से संबंधित कहानियाँ'।

इस आयोजन में सभी कथाकारों ने क्रम से अपनी लिखी हुई कहानी पढ़ी और हर कहानी सुनने के बाद श्रोताओं ने उस कहानी विशेष के बारे में अपना विचार व्यक्त किया और सुषम जी ने कहानी के विभिन्न पक्षों को ध्यान में रखते हुए टिप्पणी दी। कथा-गोष्ठी में येल विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों में पढ़ाने वालों एवं कई हिंदी प्रेमियों ने भाग लिया। इनमें सीमा खुराना के साथ-साथ वरिष्ठ व्याख्याता गीतांजलि चंदा, स्वदेश राणा, आस्था नवल, राधा गुप्ता, चारु अग्रवाल आदि ने भाग लिया। इस बार येल विश्वविद्यालय के हिंदी पढ़ने वाले कुछ विद्यार्थियों ने भी हिस्सा लिया, सबकी कहानियाँ सुनीं और हर कहानी पर अपनी प्रतिक्रिया दी। कथा गोष्ठी का शुभारंभ करते हुए सुषम जी ने सभी का स्वागत किया।

सर्वप्रथम सविता नायक ने अपनी कहानी 'वीकेंड' पढ़ी। तत्पश्चात आस्था नवल ने अपनी कहानी 'एमी' पढ़ी जो एक तलाकशुदा महिला पर आधारित है। स्वदेश राणा ने अपनी कहानी 'निषकलंकिनी' की पृष्ठभूमि बताई। प्रवासी लेखकों की कहानियों पर चर्चा के अंतर्गत सुषम बेदी ने कहा कि नए प्रवासी कहानीकार 'ऑन लुकर' की तरह होते हैं। उनकी भागीदारी जितनी अपनी संस्कृति में होती है उतनी भागीदारी यहाँ की ज़िंदगी में नहीं होती है इसलिए उनको कहानी 'एमी' 'ऑन लुकर' की दृष्टि से लिखी गई कहानी की तरह लगती है। जो भी कलाकार हो, उसकी कलाकृति में उसकी पृष्ठभूमि रहती है। एक प्रश्न के उत्तर में सुषम बेदी ने कहा कि लेखक सृजन करता है अतः लेखक अपने पात्रों को बनाता है, पर वे पात्र खुद को ही जीते हैं। उनकी अपनी एक पहचान बन जाती है।

कथा गोष्ठी के दूसरे भाग के प्रारंभ में विशाखा ठाकुर ने कथांतर में प्रकाशित अपनी कहानी 'गलीचा', सीमा खुराना ने अपनी कहानी 'बूढ़ा शेर' तथा सुषम बेदी ने अपनी कहानी 'चेरी फूलों वाले दिन' पढ़ी। कथा गोष्ठी में कहानी के विभिन्न अंगों, लेखन प्रक्रिया इत्यादि पर भी चर्चा हुई जिसपर स्मिता शुक्ला ने कहा कि कहानी के किरदारों के लिए इतना सोचना पड़ता है, तभी समग्र रूप से कहानी उत्कृष्टता तक पहुँच पाती है। उन्होंने यह भी जोड़ा कि डायस्पोरा हमारी कहानी का हिस्सा है और ऐसी कहानियों को सुनकर वह स्वयं को इनसे जुड़ा हुआ महसूस कर पाईं। गीतांजलि चंदा तथा सीमा खुराना ने विद्यार्थियों के साथ डायस्पोरा पर काफ़ी चर्चा की तथा उनका मत जानने का प्रयास किया।

विद्यार्थियों के साथ प्रश्नोत्तर के अंतर्गत कहानी की संवेदनशीलता, प्रवासी कहानीकारों की मानसिकता, कहानियों की पृष्ठभूमि, भाषा शैली, पात्र व उनकी मानसिकता, लेखन प्रक्रिया आदि पर चर्चा हुई। सुषम बेदी ने कथा गोष्ठी के विषय में कहा कि इस 'कहानी वर्कशॉप' का मुख्य उद्देश्य यही था कि लिखने वाले आपस में मिलकर चर्चा कर सकें। उनके अनुसार जब लिखने और सुनने वाले मिलते हैं तो कई बार कहानीकार जो कुछ भी लिख रहा था, उससे हटकर कुछ और लिखने का प्रयास भी करने लगता है।

हर बार की तरह इस बार भी कथा गोष्ठी बहुत सफ़ल रही। विस्तृत विचार-विमर्श एवं विद्यार्थियों की सह-भागिता ने इसको अद्वितीय बना दिया।

सविता नायक की रिपोर्ट

अभिव्यक्ति से साभार

सूरीनाम में भारतीय आप्रवासियों के आगमन के 140 वर्ष पूरे

5 जून 2013 को सूरीनाम में भारतीय आप्रवासियों के आगमन के 140 वर्ष पूरे हुए। भर्ती किए गए कुल 410 लोगों को कलकत्ता डिपो से 26 फ़रवरी 1873 को लालारुख जहाज़ से रवाना किया गया था। 5 जून 1873 को यह जहाज़ पारामारिबो पहुँचा और भारतीय आप्रवासियों की पहली टोली सूरीनाम की धरती पर उतरी।

भाषा धर्म और संस्कृति को बचाए रखने के लिए स्वाध्याय मंडलों, हिंदी कक्षाओं, मंदिर व गुप्त पंचायतों ने जन्म लिया। जो पढ़-लिख पाते थे, उन्होंने अपने बच्चों व गाँव वालों को रात में और छुट्टी के दिन पढ़ाना शुरू किया। यह किसी के घर या झोंपड़ी में होता था। इस तरह हिंदी का वृक्षारोपण हुआ।

अनुबंधी भारतवंशी बच्चों के विकास के लिए विशेष स्कूलों की व्यवस्था की गई जिन्हें 'कुली स्कूल' के नाम से जाना गया। प्रथम कुली स्कूल की स्थापना 1890 में कमोबेअना मारियम बरख प्लांटेशन में हुई। 1929 से धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं व स्वाध्याय मंडलों ने हिंदी-शिक्षण का बीड़ा उठाया ।

सूरीनाम देश में 16 मातृभाषाएँ बोली जाती हैं, फिर भी सूरीनाम में छः आकाशवाणी और चार दूरदर्शन केन्द्र हैं जहाँ हिंदी में धार्मिक प्रचार, साक्षात्कार, संगीत, सूचनाएँ और विज्ञापन आदि का प्रचार किया जाता है। धारावाहिक, नाटक, विचार-विमर्श और हिंदी फ़िल्में ही यहाँ के दूरदर्शन के आधार हैं। हिंदी फ़िल्में देखकर भी लोग हिंदी सीखते हैं। बहुत से लोग हैं जो शुद्ध हिंदी बोल लेते हैं परन्तु लिपि-ज्ञान की दिशा में अधिक कार्य अपेक्षित है।

लगभग 134 मंदिर व धार्मिक केंद्र हैं जिनमें प्रार्थना के अतिरिक्त हिंदी भाषा व धर्म संबंधी शिक्षा दी जाती है। सन् 1977 में यहाँ 'सूरीनाम हिंदी परिषद' की स्थापना की गई, जिसे सूरीनाम सरकार द्वारा मान्यता प्रदान की गई। यह संस्था प्रतिवर्ष सूरीनाम में हिंदी की परीक्षाएँ आयोजित करती है जो राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार ली जाती हैं।

सूरीनाम का साहित्य पहले तो मौखिक पद्य ही था जिसमें दोहे, चौपाइयाँ, गीत, भजन आदि शामिल थे। आज अनेक साहित्यकार अपनी लेखनी चला रहे हैं जैसे - पं.लक्ष्मी प्रसाद बलदेव, श्री मंगल प्रसाद, मुंशी रहमान खान, महादेव खुनखुन, डॉ.जीत नाराइन आदि। अब तो नए लेखक भी जुड़ रहे हैं।

सूरीनाम में हिंदी की जड़ गहरी समाई हुई है। इस देश को आबाद करने में भारत से आए मज़दूरों का बहुत बड़ा हाथ है। उन्होंने अपनी संस्कृति और भाषा की ज्योति को जलाए रखा ताकि इनकी संतानें भी इस मशाल को आगे ले जाएँ। वर्षों के संघर्ष के पश्चात आज इनके वंशजों ने इस देश में अपना प्रतिष्ठित स्थान बनाया है।

संदर्भ : ***सूरीनाम में हिंदुस्तानी– भावना सक्सेना; सूरीनाम– प्रो.पुष्पिता; विश्व हिंदी पत्रिका*** *(2010–2012)*

फ़ीजी में भारतीय आप्रवासियों के आगमन के 134 वर्ष पूरे

14 मई 2013 को फ़ीजी में भारतीय आप्रवासियों के पदार्पण के 134 वर्ष पूरे हुए। सन् 1879 ई. के 14 मई से लगातार लगभग 40 वर्षों तक 60,000 से भी अधिक प्रवासी भारतीय फ़ीजी पहुँचते रहे। गिरमिट काल के चालिस वर्षों के अंतराल में साहित्य रचना नगण्य ही रही। इसमें रामायण, महाभारत, आल्हखंड जैसे महाकाव्यों से संबंधित कथाएँ तथा मनोरंजक किस्से कहानियाँ कही-सुनी जाती रहीं।

फ़ीजी में 1920 के बाद का समय परिवर्तन का काल रहा। भविष्य को सुधारने-सँवारने के उपाय सोचे जाने लगे। भारत से हिंदी पुस्तकें मंगाई जाने लगीं जिनके माध्यम से कहानी, नाटक, निबंध आदि के माध्यम से हिंदी का प्रचार बढ़ने लगा। मंदिरों का निर्माण होने के साथ ही रामायण पाठ, बैठकें तथा धार्मिक अनुष्ठान होने लगे। राम-नवमी, कृष्ण-जन्माष्टमी, दीपावली आदि त्योहार मनाए जाने लगे। जागृति, फ़ीजी समाचार, शांतिदूत, प्रशांत समाचार आदि समाचार पत्र सामने आए।

हिंदी भाषा लगभग पूर्ण रूप से प्रवासी भारतीयों की संपर्क भाषा बन गई थी जिसके कारण औपनिवेशिक अधिकारियों को भी यह भाषा सीखनी पड़ी। हिंदी भाषा के प्रभाव से फ़ीजी के आदिम निवासी भी अछूते नहीं रहे। वे भी कुछ-कुछ हिंदी बोलने और समझने लगे । इसके साथ ही प्रचुर मात्रा में फ़ीजीयन भाषा के अनेक शब्दों को हिंदी ने अपने में समाहित कर लिया। सन् 1970 ई. को ब्रिटिश शासनाधिकार से फ़ीजी स्वतंत्र हुआ। पं.कमला प्रसाद मिश्र राष्ट्र कवि के रूप में उभरकर सामने आए और जोगिंदर सिंह कंवल, बाबू हरनाम सिंह, ईश्वरी प्रसाद चौधरी, पं.विवेकानंद शर्मा तथा अन्य कई हिंदी रचनाकार उभरकर सामने आए।

आज प्राथमिक पाठशालाओं से लेकर विश्वविद्यालय तक पढ़ाई जाने वाली हिंदी फ़ीजी की एक महत्वपूर्ण भाषा है तथा समाचार माध्यमों में भी इसका महत्वपूर्ण योगदान देखा जा सकता है। फ़ीजी में 10वीं कक्षा तक हिंदी एक अनिवार्य विषय है। यूनिवर्सिटी ऑफ़ साउथ पैसिफ़िक, यूनिवर्सिटी ऑफ़ फ़ीजी तथा फ़ीजी नेशनल यूनिवर्सिटी में स्नातक स्तर तक हिंदी की पढ़ाई होती है। 'फ़ीजी कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन' और 'लौतोका टीचर ट्रेनिंग कॉलेज' में हिंदी अध्यापकों को प्रशिक्षित किया जाता है।

रेडियो फ़ीजी के साथ ही अब नवतरंग, रेडियो फ़ीजी टू और बूला एफ़.एम.98 हिंदी कार्यक्रम प्रसारित करते हैं। फ़ीजी वन दूरदर्शन में भी हिंदी समाचार प्रसारित होता है। संभवतः भारत के बाद फ़ीजी एकमात्र ऐसा देश है जिसके संविधान में हिंदी को आधिकारिक भाषा का दर्जा प्राप्त है। फ़ीजी का राष्ट्रीय गीत सभा-संस्थाओं द्वारा हिंदी में गाया जाता है।

संदर्भ : भाषा, साहित्य एवं संस्कृति– डॉ.विवेकानंद शर्मा,
***विश्व हिंदी पत्रिका** (2010)*

सूरीनाम तथा फ़ीजी साहित्य पर अनेक पुस्तकें लिखी गई हैं जिनमें डॉ. पुष्पिता अवस्थी तथा भावना सक्सेना की भी रचनाएँ शामिल हैं । नीचे पुस्तकों के आवरण-चित्र उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत हैं । इसी कड़ी में डॉ. विमलेश कांति वर्मा की फ़ीजी पर आधारित पुस्तक 'फ़ीजी का सृजनात्मक हिंदी साहित्य' प्रकाशित हुई है जिसकी समीक्षा अगले पृष्ठ पर प्रस्तुत है ।

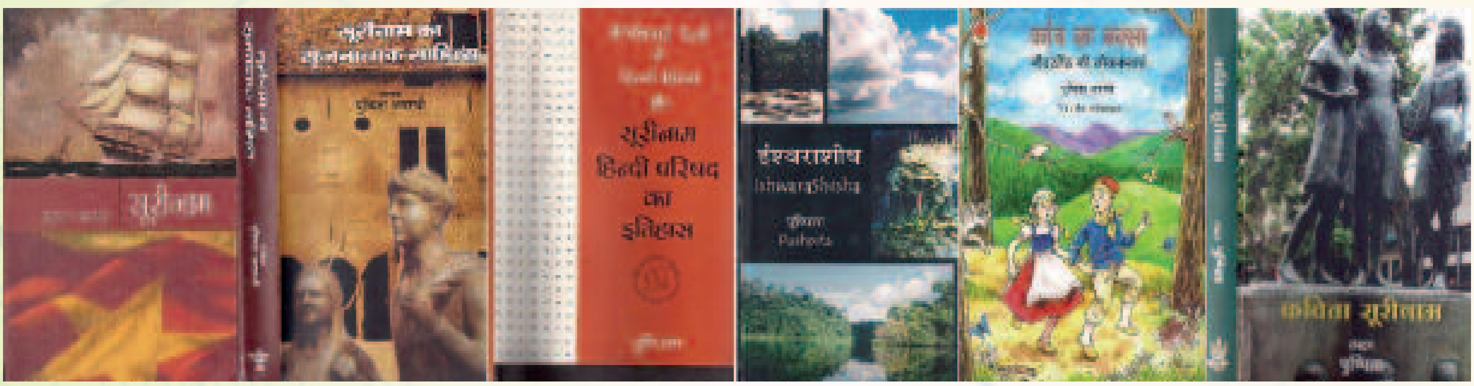

वियतनाम में हुआ पहले हिंदी वियतनामी शब्दकोश का लोकार्पण

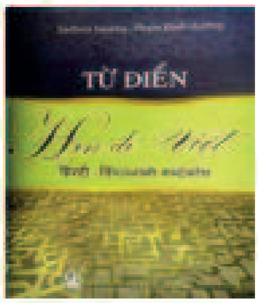

वियतनाम में हिंदी के लिए समर्पित प्राध्यापक श्रीमती साधना सक्सेना और उनके एक विद्यार्थी फेम दिन हयूआंग ने मिलकर वियतनाम में हिंदी सीखने वाले सैकड़ों विद्यार्थियों के लिए हिंदी वियतनामी का एक विशाल शब्दकोश तैयार किया है। वियतनाम स्थित भारतीय दूतावास के सहयोग से बने इस शब्दकोश का लोकार्पण पिछले दिनों वियतनाम के हो ची मिन विश्वविद्यालय में हुआ।

हिंदी वियतनामी के इस शब्दकोश का निर्माण वियतनाम स्थित भारत के दूतावास और हो ची मिन विश्वविद्यालय के बीच हुए एक अनुबंध के आधार पर किया गया है। इस अनुबंध की सबसे खास बात यह है कि इस शब्दकोश की पहली 150 प्रतियाँ इस विश्वविद्यालय में हिंदी सीख रहे विद्यार्थियों को दी जाएगी ताकि वे आसानी से हिंदी सीख सकें और भारत की संस्कृति को समझ सकें।

शब्दकोश के लोकार्पण के अवसर पर भारतीय दूतावास के श्री अभय कुमार ने बताया कि श्रीमती सक्सेना और उनके विद्यार्थी फेम दिन के लगभग चार साल के श्रम के बाद बना यह शब्दकोश वियतनाम में हिंदी के प्रचार में अहम भूमिका निभाएगा। इस शब्दकोश में वियतनामी पर्याय के साथ-साथ हिंदी के मुहावरों और कहावतों के समानार्थी वियतनामी मुहावरे और कहावतें भी दी गई हैं।

उल्लेखनीय है कि हो ची मिन विश्वविद्यालय में सन 2000 से हिंदी पढ़ाई जा रही है। इस शब्दकोश के प्रकाशन से वियतनाम में हिंदी छात्रों को अपने अध्ययन की सुगमता के लिए एक महत्वपूर्ण साधन प्राप्त हुआ है।

हिंदी होमपेज से साभार

द्विभाषी हिंदी-अंग्रेज़ी शब्दकोश का लोकार्पण

12 अप्रैल 2013 को महात्मा गांधी संस्थान में हिंदी विभाग की पूर्व अध्यक्षा तथा वरिष्ठ व्याख्याता डॉ.राजरानी गोबिन द्वारा रचित मॉरीशस के सांस्कृतिक शब्दों के द्विभाषी हिंदी-अंग्रेज़ी कोश का लोकार्पण संपन्न हुआ।

लोकार्पण समारोह में मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम श्री राजकेश्वर प्रयाग की उपस्थिति रही। उन्होंने अपने संदेश में कहा कि मॉरीशस में महात्मा गांधी संस्थान एशियाई भाषाओं का प्रचार करने वाली मुख्य संस्था है। यह आवश्यक है कि यह संस्था हिंदी भाषा के प्रति छात्रों की रुचि बढ़ाए। छात्रों के लिए हिंदी भाषा का अध्ययन प्राथमिक स्कूल से लेकर माध्यमिक पाठशाला के फ़ॉर्म 3 तक अनिवार्य होता है। इनमें बहुत से छात्र फ़ॉर्म 3 के पश्चात हिंदी के स्थान पर अन्य विषय चुनते हैं। अत: एक ऐसे अभियान की शुरूआत की आवश्यकता है जिससे अधिक से अधिक बच्चे हिंदी भाषा का अध्ययन करें। हिंदी भाषा हमारे मूल्य और संस्कृति के बीच की कड़ी है। उनके अनुसार यह शब्दकोश हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहयोग दे पाएगा।

इस अवसर पर मॉरीशस में भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री टी.पी.सीताराम ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति विराट है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस शब्दकोश से मॉरीशस की जनता को भारतीय संस्कृति के शब्दों की समझ हो पाएगी तथा अन्य देशों में भी यह कोश उपयोगी सिद्ध होगा।

डॉ.राजरानी गोबिन ने बताया कि यह कोश मॉरीशस में हिंदी में मौजूद सरल शब्दों को लुप्त होने से रोकने और उन्हें नई पीढ़ी के लिए संजोने का कार्य करेगा। इस कोश में मॉरीशस में प्रयुक्त संस्कृति संबंधी शब्दों को अंग्रेज़ी में समझाया गया है। इनमें देवी-देवता, तीज-त्योहार, संगीत, वाद्य यंत्र, परिवार आदि शब्दावली उपलब्ध है। इस शब्दकोश के माध्यम से मॉरीशस में छात्रों तथा शोधकर्ताओं को हिंदी भाषा और संस्कृति के निकट पहुँचने और इन्हें बेहतर समझने में सुविधा होगी।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

पुस्तक समीक्षा – 'फ़ीजी का सृजनात्मक हिंदी साहित्य'

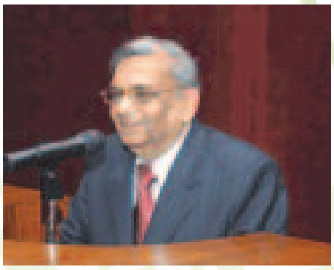

हाल ही में डॉ.विमलेश कांति वर्मा द्वारा संपादित पुस्तक 'फ़ीजी का सृजनात्मक हिंदी साहित्य' भारत में साहित्य के सक्रिय विकास के लिए कार्य करनेवाली राष्ट्रीय संस्था, साहित्य अकादमी से प्रकाशित हुई। यह फ़ीजी द्वीप समूह के प्रतिष्ठित हिंदी लेखकों की चुनी हुई रचनाओं का पहला प्रामाणिक संचयन है। यह संचयन फ़ीजी के हिंदी साहित्य की मूल संवेदना – 'प्रवास की पीड़ा' को उकेरता है। डॉ.वर्मा ने रचनाओं को विभिन्न काल-खंडों में बाँटकर रचना प्रक्रिया का विस्तार से मूल्यांकन किया है।

इस संकलन की विशेषता है फ़ीजी के भारतवंशियों द्वारा विकसित की गई हिंदी की विदेशी भाषा शैली, फ़ीजी बात (फ़ीजी की हिंदी) में लिखी साहित्यिक रचनाओं और गिरमिट गीतों का संकलन। यह पुस्तक शोधार्थियों के लिए बहुत लाभदायक रहेगी। काव्य व गद्य, दो खंडों में बंटा यह संचयन फ़ीजी के प्रतिष्ठित साहित्यकारों यथा राष्ट्र कवि पं.कमला प्रसाद मिश्र, अमरजीत कौर, काशीराम कुमुद, कुँवर सिंह, हज़रत आदम, जोगिंदर सिंह कंवल, ईश्वरी प्रसाद चौधरी तथा अन्य कई हिंदी रचनाकारों की रचनाओं से परिचय कराता है।

फ़ीजी पर डॉ.विमलेश कांति वर्मा की यह दूसरी पुस्तक है। डॉ.वर्मा टोरंटो विश्वविद्यालय (कनाडा), सोफ़िया विश्वविद्यालय (बल्गारिया), और साउथ पैसिफ़िक विश्वविद्यालय (फ़ीजी) में हिंदी भाषा और साहित्य का अध्यापन तथा विदेशी हिंदी शिक्षकों के प्रशिक्षण कर चुके हैं। भारतीय राजनयिक के तौर पर आप फ़ीजी स्थित भारतीय उच्चायोग में प्रथम सचिव (हिंदी और शिक्षा) के महत्वपूर्ण दायित्व का निर्वाह कर चुके हैं।

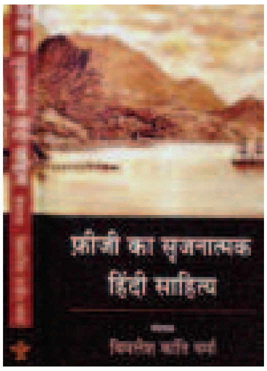

डॉ.वर्मा ने विदेशियों के लिए हिंदी के विविध स्तरीय पाठ्यक्रमों का निर्माण तथा विशेषत: फ़ीजी, मॉरीशस, सूरीनाम और दक्षिण अफ़्रीका में प्रवासी भारतीयों द्वारा रचे जा रहे सृजनात्मक हिंदी साहित्य की विशिष्ट भाषिक शैलियों पर गंभीर अध्ययन-अनुसंधान किया है।

भावना सक्सेना के सौजन्य से

हिंदी-उर्दू शब्दों का संगम 'भारत महान'

यह विशेष रिपोर्ट है एक युवक के हिंदी उपन्यास के लोकार्पण की जिसने अपनी पुस्तक के ज़रिये न केवल युवाओं को नई दिशा की प्रेरणा दी है, बल्कि साहित्य के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का लोहा भी मनवाया है। इनका नाम है आसिम खान, आप चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के पूर्व छात्र रहे हैं। इनके उपन्यास का शीर्षक है 'भारत महान'। उपन्यास में हिंदी और उर्दू के शब्दों का संगम बेहद प्रभावशाली ढंग से किया गया है।

आसिम की पुस्तक का विमोचन प्रेस क्लब में न्यायविद्, शिक्षाविद् और सामाजिक सरोकारों से जुड़े वरिष्ठ लोगों की उपस्थिति में हुआ। इस मौके पर पूर्व न्यायाधीश चंद्र भूषण पाण्डेय ने कहा कि आसिम ने अपनी पुस्तक में हिंदी और उर्दू का समावेश करके जिस तरह से सरल भाषा में कविता के माध्यम से भारत की महान संस्कृति, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा, भारत के महापुरुषों के यश व कीर्ति और भारत की सन् 1857 की क्रांति का वर्णन किया है, वह बेहद सराहनीय और प्रेरणादायक है।

उन्होंने कहा कि आसिम खान की यह पुस्तक भारत में हर वर्ग में सराही जाएगी और हिंदू, मुस्लिम, सिख, इसाई और दूसरे धर्मों के लोगों में राष्ट्रभक्ति एवं राष्ट्रप्रेम जागृत करेगी। इस मौके पर चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति के.सी.पाण्डेय ने कहा कि आसिम हमारे विश्वविद्यालय के छात्र रहे हैं और अपने छात्र की इस उपलब्धि पर आज वह गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं।

पुस्तक के लेखक ने कहा कि यह पुस्तक देश को समर्पित है। उन्होंने कहा, ''मेरी भविष्य में भी कोशिश रहेगी कि अपनी कविताओं, रचनाओं के माध्यम से भारतीय एकता, प्रेम और देश की महान संस्कृति को प्रभावशाली तरीके से पाठकों के सामने ला सकूं।''

प्रवासी दुनिया से साभार

अखिल भारतीय कवि-सम्मेलन

मध्य प्रदेश लेखक संघ ज़िला इकाई, गुना द्वारा अप्रैल में गुढ़ी पाडवा के अवसर पर मानव भवन, गुना में प्रसिद्ध ओज कवि श्री पँवार राजस्थानी की अध्यक्षता में अखिल भारतीय कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया।

इस कवि-सम्मेलन में पँवार राजस्थानी सहित कृष्णकांत 'मधुर', सुश्री प्रीति विश्वास, डॉ.शिवेन्द्र सिंह 'शिवेन्द्र', कामिल ग्वालियरी, सुश्री संगीता 'सरल', राजेन्द्र चौहान ने अपनी रचनाओं से देर रात तक श्रोताओं को बांधे रखा। कवि-सम्मेलन का संचालन संस्था के अध्यक्ष अनिरुद्ध सिंह सेंगर ने किया।

अतिथियों द्वारा दीप-प्रज्ज्वलन और शरद सक्सेना द्वारा सरस्वती वंदना के बाद कवियों का स्वागत किया गया। इस अवसर पर नगर के प्रबुद्ध साहित्यकार, साहित्यप्रेमी, कवि आदि उपस्थित थे जिन्होंने कवियों की रचनाओं का भरपूर आनंद लिया। कवयित्री प्रीति विश्वास, कवि कृष्णकांत 'मधुर', कवयित्री सुश्री संगीता 'सरल' आदि ने अपनी रचनाएँ सुनाईं।

कवि-सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए कवि पँवार राजस्थानी ने श्रोताओं में वीर रस का संचार करते हुए 'हाड़ा रानी' के कथानक को लेकर ओजस्वी काव्य पाठ किया। कवि डॉ.शिवेन्द्र सिंह 'शिवेन्द्र' ने अपनी प्रस्तुति से श्रोताओं का दिल जीत लिया – "मैं शाइर हूं वतन के हर धरम का ध्यान रखता हूँ, मैं मंदिर और मस्जिद का बराबर मान रखता हूँ। जहाँ हर कस्बे में राम और रहमान संग खेलें, मैं दिल की धड़कनों में ऐसा हिन्दुस्तान रखता हूँ।" शाइर कामिल ग्वालियरी ने बेहद संजीदा ग़ज़लों को प्रस्तुत करके श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। कवि राजेंद्र सिंह चौहान ने भी काव्य पाठ किया। कवि-सम्मेलन का संचालन कर रहे कवि अनिरुद्ध सिंह सेंगर ने भी कुछ काव्य-पंक्तियाँ सुनाईं - "उठो, उठो ओ अमर जवानो बोलो अपनी बोली रे, भारत माता की जय बोलो माथे से लगा अक्षत-रोली रे।"

कवि-सम्मेलन का दूसरा दौर श्रोताओं के अनुरोध पर प्रस्तुत किया गया और अंततः डॉ. हरकांत अर्पित ने आभार व धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रेषक : अनिरुद्ध सिंह सेंगर

महादेवी वर्मा के साहित्य पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

दाएँ से दूसरी जापान की डॉ. तोमोको किकुची

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में 'महादेवी वर्मा की साहित्य साधना' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष रहे डॉ. डी.डी.एस. संधू, कुलपति, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र। कार्यक्रम में देश-विदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों व महाविद्यालयों के शोध छात्रों व प्राध्यापकों की सहभागिता रही। कार्यक्रम के दो सत्र थे। पहले सत्र में कार्यक्रम की संयोजक प्रो. पुष्पा रानी ने अतिथियों का स्वागत व सम्मान किया। इस अवसर पर प्रो. सरला मलिक विशेष रूप से अमेरिका से इसी कार्यक्रम के लिए पधारी थीं। इस अवसर पर उन्हें विशेष सम्मान दिया गया।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि रहीं जापान से पधारीं डॉ. तोमोको किकुची जिन्होंने महादेवी के साहित्य पर शोध किया है व जोर्जिया से आई डॉ. मृदुल कीर्ति ने महादेवी के विषय में उनके बचपन के संस्मरण सुनाये। कुलपति डॉ. संधू ने अध्यक्षीय भाषण देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय में इस तरह की गतिविधियाँ होती रहनी चाहिए जिससे शोधार्थियों का मार्गदर्शन तो होता ही है, साथ ही साहित्य के नये आयाम भी हमारे सामने आते हैं। उन्होंने प्रो. पुष्पा रानी को इसके लिए विशेष बधाई दी और आश्वासन दिया कि इस प्रकार के कार्यक्रमों के लिए उनका पूरा सहयोग व समर्थन रहेगा।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता मूर्धन्य साहित्यकार डॉ. वेद व्यथित ने की। इस सत्र में शोधार्थियों के अतिरिक्त प्राध्यापकों ने भी शोध पत्र प्रस्तुत किये। अध्यक्ष पद से बोलते हुए डॉ.वेद व्यथित ने कहा कि हमें साहित्य के निहितार्थ को ठीक से समझना चाहिए। लेखक की आत्मा तक शोधार्थी का पहुँचना ही महत्वपूर्ण शोध है। साथ ही महादेवी वर्मा के साहित्य में वर्णित संस्कृति के प्रति जिसका मूल है - करुणा व उनके साहित्य में वर्णित राष्ट्र प्रेम के संदेश को भी हृदयंगम करना चाहिए। कार्यक्रम का सफ़ल संचालन सुकर्मवती देवी ने किया।

प्रवासी दुनिया से साभार

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा में द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा द्वारा संचालित उच्च शिक्षा और शोध संस्थान में 'भवानी प्रसाद मिश्र एवं विष्णु प्रभाकर जन्म शती समारोह' के तहत द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन सुप्रसिद्ध कला संग्राहक और समीक्षक पद्मश्री जगदीश मित्तल ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए उन्होंने दोनों साहित्यकारों से अपने निकट संबंधों का स्मरण किया और बताया कि उन्होंने ही भवानी प्रसाद मिश्र के पहले कविता संग्रह 'गीत फ़रोश' का आवरण चित्र बनाया था।

बीज भाषणकर्ता प्रो.दिलीप सिंह ने कहा कि भवानी प्रसाद मिश्र और विष्णु प्रभाकर दोनों ही अपनी तरह से लिखने वाले रचनाकार थे जिनकी रचनाओं में देश दुनिया की हर समस्या और चिंता झलकती है। उन्होंने कहा कि ये दोनों साहित्यकार संत परंपरा के रचनाकार हैं क्योंकि इन्हें कभी 'सीकरी' से कोई काम नहीं रहा। प्रो.सिंह ने भवानी भाई और विष्णु जी के साहित्य में निहित भारतीयता, मानवीय संवेदना और पारदर्शिता की चर्चा करते हुए उन्हें अपनी-अपनी विधा के गांधी, शब्द बंधु, अन्लेबल्ड लेखक और पोर-पोर साहित्यकार के रूप में प्रतिपादित किया।

उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष प्रख्यात साहित्यकार प्रो.गंगा प्रसाद विमल ने अपने संबोधन में कहा कि इन दो गांधीवादी साहित्यकारों की जन्म शती का यह आयोजन वस्तुतः ऐतिहासिक पर्व है क्योंकि इस बहाने आज की पीढ़ी भारतीय लोक के अकूत अनुभव में रचे पगे साहित्य की मामूली आदमी तक पहुँचने की जद्दोजहद से परिचित हो सकेगी।

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा से पधारे प्रसिद्ध समाजविज्ञानी प्रो.राम शरण जोशी ने अपने विशिष्ट वक्तव्य में दोनों स्मरणीय साहित्यकारों को गांधी जीवन दृष्टि के प्रतीक कहा है और याद दिलाया कि वे अपने लेखन और निजी जीवन दोनों में तनिक भी रूढ़िवादी और यथास्थितिवादी नहीं थे। इसीलिए उनका साहित्य प्रगति, भारतीय मूल्य और समग्र मानवता का साहित्य है।

केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के क्षेत्रीय अधिकारी डॉ.प्रदीप कुमार शर्मा ने भवानी प्रसाद मिश्र को गीत का अलबेला हस्ताक्षर और विष्णु प्रभाकर को साहित्य का गांधी कहा तो आन्ध्र सभा की अध्यक्ष श्रीमती एम.सीतालक्ष्मी ने समसामयिक जीवन और साहित्य में उपस्थित मूल्यों के संकट की चर्चा करते हुए यह आशा जताई कि आज की दिग्भ्रमित दुनिया को गांधी चिंतन और भारतीयता से अनुप्राणित साहित्यकार ही सही मार्ग दिखा सकते हैं।

आरम्भ में कुमारी स्वप्ना कल्याणकार ने सरस्वती वन्दना प्रस्तुत की तथा सभा के सचिव सी.एस.होसगौडर ने अतिथि साहित्यकारों का हार्दिक स्वागत किया। इस अवसर पर एक पोस्टर प्रदर्शनी भी लगायी गयी जिसका उद्घाटन प्रो.राम शरण जोशी ने किया। प्रदर्शनी में दोनों साहित्यकारों की रचनाओं के उद्धरण योग्य अंशों के पोस्टर प्रदर्शित किये गये हैं।

उद्घाटन सत्र में ही प्रो.दिलीप सिंह ने वरिष्ठ कवयित्री विनीता शर्मा के ताज़ा कविता संग्रह 'स्वान्तः सुखाय' को लोकार्पित भी किया। समारोह के पहले दिन तीन स्वतन्त्र विचार सत्रों में भवानी प्रसाद मिश्र के जीवन और प्रदेय, साहित्यिक विविध आयाम तथा मूल्यांकन पर केन्द्रित चर्चा-परिचर्चा संपन्न हुई। इन सत्रों की अध्यक्षता क्रमशः प्रो.टी.वी. कट्टीमनी, डॉ.आर.एस. शुक्ल और प्रो.राम जन्म शर्मा ने की। चर्चा-परिचर्चा में प्रो.हीरालाल बाछोतिया, डॉ.साहिरा बानू बी. बोरागल, प्रो. अमर ज्योति, डॉ. प्रदीप कुमार सिंह, डॉ. मृत्युंजय सिंह, डॉ. बलविंदर कौर, आदि ने विचारोत्तेजक आलेख तथा वक्तव्य प्रस्तुत किये।

शताब्दी समारोह में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के अतिरिक्त विभिन्न विश्वविद्यालयों और संस्थानों से जुड़े विद्वानों, पत्रकारों, शोधार्थियों, राजभाषा अधिकारियों और छात्र-छात्राओं ने बड़ी संख्या में उत्साहपूर्वक भागीदारी निभाई।

विष्णु प्रभाकर पर केन्द्रित समारोह का दूसरा विचार सत्र आयोजित किया गया तथा सायंकाल समाकलन सत्र की अध्यक्षता केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक प्रो.केशरी लाल वर्मा ने की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रसिद्ध भाषाविद् प्रो.वी.आर. जगन्नाथन रहे। समाकलन सत्र में प्रो.दिलीप सिंह की प्रकाशित कृति 'भाषा, लोक और संस्कृति' का लोकार्पण किया गया।

डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा

मॉरीशस में हिंदी संगठन द्वारा पुस्तक मेला

वक्तव्य देते हुए श्री राजनारायण गति, प्रधान – हिंदी संगठन ,
मंचासीन (बाएँ से) : श्रीमती अंजू घरभरन, श्री आनंद बहादुर, सिवा सुप्रमण्यं कोविल के आचार्य,
मंत्री मुकेश्वर चुनी, श्री हनुमान दुबे गिरधारी, श्री गंगाधरसिंह सुखलाल

विश्व पुस्तक दिवस के उपलक्ष्य पर मॉरीशस में हिंदी संगठन (हिंदी स्पीकिंग यूनियन) द्वारा पुस्तक मेले का आयोजन किया गया। यह मेला एक बिक्री-प्रदर्शनी के रूप में देश के कोने-कोने में लगाया गया। मेले का उद्घाटन 6 मई को देश के उत्तर में स्थित गुडलैण्ड्स गाँव के शिवा सुब्रमण्यं कोविल के सभागार में किया गया। समारोह में मॉरीशस के कला एवं संस्कृति मंत्री मुकेश्वर चुनी तथा इलाके के सांसद व स्वास्थ्य मंत्री लोमेश बंधु की उपस्थिति रही। इनके अतिरिक्त उपस्थित महानुभावों में रिवियेर जी रॉपार ज़िला परिषद् के अध्यक्ष श्री आनन्द बहादुर, कोविल के आचार्य, विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव व हिंदी संगठन के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

संगठन के प्रधान श्री राजनारायण गति ने अपने स्वागत भाषण में पाठ्यक्रमोत्तर हिंदी पुस्तकें प्राप्त करने की कठिनाइयों की चर्चा करते हुए इस मेले के आयोजन के उद्देश्यों पर बात की। अपने वक्तव्यों में दोनों मंत्रियों ने इस पुस्तक मेले को हिंदी के बढ़ते वैश्विक प्रभुत्व के साथ जोड़ा। उपस्थित छात्र-छात्राओं को सम्बोधित करते हुए दोनों महानुभावों ने भारत को भविष्य का देश और हिंदी को भविष्य की भाषा बताया और युवकों को परामर्श दिया कि अपना और देश का भविष्य उज्ज्वल करने हेतु वे हिंदी भाषा के साथ जुड़ें कारण कि भविष्य में भारत और अफ़्रीका के सम्बन्धों की सुदृढ़ता के लिए मॉरीशस को ही सेतु का कार्य करना है। महानुभावों ने इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु शिक्षण और पठन के महत्व पर बल दिया तथा प्रौद्योगिकी के युग में पुस्तकों की प्रासंगिकता को रेखांकित किया।

हिंदी संगठन द्वारा आयोजित वार्षिक हिंदी पुस्तक मेले में उपलब्ध पुस्तकों में भाषा, साहित्य, इतिहास, स्वास्थ्य, विज्ञान, कोश और विशेषकर बाल साहित्य की बहुत ही अच्छी पुस्तकें हैं। गुडलैंड्स से आरम्भ होकर यह प्रदर्शनी देश के अनेक क्षेत्रों में इस क्रम से चली : 7 मई – युनिवर्सल कॉलिज; 8 मई – मर्टन कॉलिज; 10 मई – बासदेव बिसुनदयाल कॉलिज; 13 मई – शेमें ग्रेनिये समाज कल्याण केंद्र; 15 मई – लिसे मोरिसियें; 20 मई – विंसॉर कॉलिज; 22 मई – शिवोपासक सभा; 24 मई – एन.पी.एफ़. इमारत, पोर्ट लुईस; 28 मई – त्रा बुचिक आर्य समाज, त्रिओले।

मेले से साहित्य प्रेमी, छात्र और हिंदी पाठक तो लाभ उठा पाए ही साथ ही विद्यालयों के लिए भी बड़ी मात्रा में हिंदी पुस्तकें प्राप्त करने का यह स्वर्णिम अवसर बन गया है।

हिंदी संगठन की रिपोर्ट

विज्ञान परिषद्, प्रयाग का शताब्दी समारोह

27 अप्रैल, 2013 को हिंदी में विज्ञान का प्रचार-प्रसार करने वाली सबसे प्राचीन और प्रमुख संस्था विज्ञान परिषद्, प्रयाग, इलाहबाद के शताब्दी समारोह कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ के राज्यपाल महामहिम श्री शेखर दत्त और अध्यक्ष विश्व कृषि वानिकी केंद्र (दक्षिण एशिया) नई दिल्ली के अध्यक्ष डॉ.विरेंद्र पाल सिंह थे।

दीप प्रज्ज्वलन एवं कुलगीत के बाद परिषद् के सभापति डॉ.दीनानाथ तिवारी ने मंचस्थ महानुभावों एवं उपस्थित सभी अतिथियों का स्वागत किया। अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि इस सभा ने विज्ञान के क्षेत्र में संपूर्ण 20वीं सदी में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हिंदी ने राष्ट्रीयता को परिपुष्ट किया और विज्ञान परिषद् ने हिंदी के प्रचार के साथ ही सब उन्नतियों के मूल विज्ञान को आम जनता की भाषा में आम लोगों तक पहुँचाने का सराहनीय कार्य किया।

परिषद् के प्रधान मंत्री और भारत में हिंदी में विज्ञान के अग्रणी लेखक डॉ.शिवगोपाल मिश्र ने परिषद् के इतिहास को पटल पर रखा और साथ ही यह भी बताया कि उस प्रारंभिक दौर में किस प्रकार भारत के अग्रणी हिंदी लेखकों, वैज्ञानिकों एवं राजनेताओं ने परिषद् की सब प्रकार से सहायता की थी। परिषद् ने विज्ञान के प्रचार के लिए विविध उद्योग किये और विज्ञान विषयक 100 से अधिक हिंदी पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

मुख्य अतिथि महामहिम श्री शेखर दत्त ने अपने विस्तृत वक्तव्य में सर्वप्रथम परिषद् को उसके शतायु होने और विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए शुभकामनाएँ दीं और इस तरह की संस्थाओं की स्थापना को आवश्यक बताया और देश के नवयुवकों का आह्वान किया कि वे विज्ञान को समाज के निचले स्तर तक ले जाने का उद्योग करें। समारोह के अध्यक्ष डॉ.वीरेंद्र पाल सिंह ने अपने वक्तव्य में सभा के कार्यों की प्रशंसा की और कहा कि ये अति सराहनीय हैं। 21वीं सदी में इस प्रकार की संस्थाओं की प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है।

समारोह में विज्ञान परिषद् की स्मारिका 'शतवार्षिकी' का विमोचन किया गया। साथ ही विज्ञान विषयक 6 पुस्तकों का विमोचन हुआ और 50 से अधिक लोगों को विज्ञान के क्षेत्र में सराहनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया और प्रशंसा पत्र प्रदान किये गये। वाराणसी के डॉ.राकेश कुमार दूबे को विज्ञान के क्षेत्र में उनके लेखों के लिए विज्ञान का प्रतिष्ठित 'व्हिटेकर विज्ञान पुरस्कार, 2012' प्रदान किया गया। इस समारोह में 10 विश्वविद्यालयों के कुलपति, 8 संस्थाओं के निदेशक और भारत भर के प्रमुख विश्वविद्यालयों के सैकड़ों प्राध्यापकों सहित 8 सौ से अधिक लोग उपस्थित थे।

अंत में परिषद् के सभापति डॉ.दीनानाथ तिवारी ने समारोह में आए हुए सभी अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापित किया। इस भव्य समारोह का कुशल संचालन परिषद् के प्रमुख कार्यकर्ता श्री देवव्रत द्विवेदी ने किया।

वाराणसी, भारत से डॉ.राकेश कुमार दूबे की रिपोर्ट

राजभाषा सम्मेलन

सोलन, हिमाचल प्रदेश, भारत में 24 से 26 अप्रैल 2013 तक राजभाषा संस्थान, नई दिल्ली द्वारा तीन दिवसीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान राजभाषा संगोष्ठी व कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में देश भर के सरकारी कार्यालयों के 60 से भी अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस अवसर पर सर्वश्री निशिकांत महाजन, डॉ.महेश गुप्त एवं गोपेश गोस्वामी ने बदलते व्यावसायिक परिवेश में हिंदी, राजभाषा नीति, संवाद कौशल, तनाव प्रबंधन, हिंदी कार्यशाला संचालन, कार्यान्वयन प्रक्रिया के अंग तथा वातावरण अनुकूलन आदि विभिन्न विषयों पर अपने रोचक व ज्ञानवर्द्धक व्याख्यान प्रस्तुत किये। सम्मेलन के दौरान विभिन्न सत्रों में प्रतिभागियों ने भी अपने अमूल्य विचार एवं कलाओं का प्रदर्शन किया। इस अवसर पर केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड के संपादक श्री किशोर श्रीवास्तव द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं सामाजिक विसंगतियों व सद्भाव पर केंद्रित स्वनिर्मित जन चेतना कार्टून पोस्टर प्रदर्शनी 'खरी-खरी' का प्रदर्शन भी किया गया।

सम्मेलन के दौरान विभिन्न सरकारी कार्यालयों को राजभाषा हिंदी की उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए सम्मानित भी किया गया जिनमें केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड का नाम विशेष उल्लेखनीय है। बोर्ड की ओर से हिंदी अधिकारी श्रीमती ज्योति सिंह एवं संपादक श्री किशोर श्रीवस्तव ने स्मृति चिह्न प्राप्त किये।

श्रीमती शशि श्रीवास्तव

संपादक – 'हम सब साथ-साथ है' की रिपोर्ट

विक्रमी संवत् के नव वर्ष 2070 के शुभ अवसर पर कवि सम्मेलन

14 अप्रैल को आप्टे भवन, केशव कुञ्ज, दिल्ली में इन्द्रप्रस्थ साहित्य भारती सम्बद्ध - अखिल भारतीय साहित्य परिषद् न्यास द्वारा विक्रमी संवत् के नव वर्ष 2070 के शुभ अवसर पर कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। दीप प्रज्ज्वलन के पश्चात सरस्वती वंदना की गई। प्रवीण आर्या, अध्यक्ष भारद्वाज जी, महेश शर्मा और विशिष्ट अतिथि राम नारायण दूबे के सान्निध्य में देवेन्द्र आर्या और मनोज शर्मा के सफ़ल मंच संचालन में कई प्रतिष्ठित तथा नवोदित कवि और कवयित्रियों ने रचना पाठ किया।

प्रवीण आर्या ने विक्रमी संवत् की समकालीन उपयोगिता पर प्रकाश डाला और अपने गीतों के माध्यम से देश भक्ति और नव निर्माण पर ज़ोर दिया। देवेन्द्र आर्या ने मंच संचालन के दौरान अपने अनुभव को दोहों के रूप में सुनाया। शशी श्रीवास्तव, संगीता शर्मा, मृदुला शुक्ला, भारत गौड़, पूनम माटिया आदि ने रचना पाठ किया।

पूनम माटिया के सौजन्य से

गोदावरी ज़िलों में हिंदी का प्रचार–प्रसार

अक्षरा साहित्यिक-सांस्कृतिक सेवा पीठ के तत्वावधान में आंध्रप्रदेश हिंदी अकादमी के सहयोग से दिनांक 7 अप्रैल 2013 को गोदावरी ज़िलों में 'हिंदी का प्रचार-प्रसार' नामक एकदिवसीय राज्य स्तरीय संगोष्ठी का उद्घाटन श्री वेंकटेश्वर आनम् कलाकेंद्रम् में संपन्न हुआ। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि के रूप में पद्मश्री आचार्य यार्लगड्डा लक्ष्मीप्रसाद, अध्यक्ष - उच्च स्तरीय समिति, राजभाषा, यूजीसी, नई दिल्ली उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता हैदराबाद विश्वविद्यालय के आचार्य आर.एस. सर्राजु ने की। विशिष्ट अतिथियों के रूप में आचार्य जार्ज विक्टर, कुलपति, आदिकवि नन्नय्या विश्वविद्यालय, राजमंड्री, आचार्य बी.सत्यनारायण, अनुसंधान अधिकारी, आंध्रप्रदेश हिंदी अकादमी, हैदराबाद तथा डॉ. कर्रि रामारेड्डी भी मंच पर उपस्थित थे।

अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलित कर समारोह का शुभारंभ किया। आदित्या डिग्री कॉलिज की छात्राओं ने प्रार्थनागीत प्रस्तुत किया। तदुपरांत अतिथियों का परिचय एवं स्वागत अक्षरा संस्थापक कार्यदर्शी तथा संगोष्ठी संयोजक डॉ.पेरिसेट्टि श्रीनिवास राव ने किया। मुख्य अतिथि पद्मश्री आचार्य यार्लगड्डा लक्ष्मीप्रसाद ने कहा कि इस समय समाज-उपयोगी रचनाएँ करने की ज़रूरत है, साथ ही उन्होंने नवलेखक तथा प्रचारकों को प्रोत्साहन भी दिया। जार्ज विक्टर ने हिंदी प्रचारकों को शुभकामनाएँ दीं। आचार्य बी.सत्यनारायण ने आंध्रप्रदेश हिंदी अकादमी की गतिविधियों के बारे में अवगत कराया। डॉ.के.रामरेड्डी ने हिंदी के महत्व और हिंदी सीखने की आवश्यकता के बारे में अपने अनुभव बाँटे।

आचार्य आर.एस.सर्राजु ने अपना अध्यक्षीय भाषण देते हुए कहा कि आंध्रप्रदेश में सर्वप्रथम हिंदी प्रचारक प्रशिक्षण महाविद्यालय की स्थापना राजमंड्री में हुई थी। इसी सिलसिलेवार में आदिकवि नन्नय्या विश्वविद्यालय में भी स्नातकोत्तर हिंदी विभाग खोलने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया है।

दोपहर को दो विचार सत्रों की अध्यक्षता श्री एस.पी.गंगिरेड्डी और आचार्य बी.सत्यनारायण ने की। इन सत्रों में डॉ.रविचंद्र, डॉ.विश्वनाथाचारी, डॉ.भामि रेड्डी, डॉ.कामेश्वरराव, श्री रामाराव, श्रीमती जयलक्ष्मी आदि ने प्रपत्र वाचन किया। समापन समारोह की अध्यक्षता आचार्य बी.सत्यनारायण ने की तथा मुख्य अतिथि के रूप में आचार्य सर्राजु उपस्थित थे।

अक्षरा की ओर से अतिथियों का तथा प्रपत्र वाचकों का सम्मान फ़णि नागेश्वरराव, कोसूरी सूर्यनारायण ने किया। कार्यक्रम का संचालन तथा धन्यवाद ज्ञापन संगोष्ठी संयोजक डॉ.पेरिसेट्टि श्रीनिवास राव ने किया। कार्यक्रम में एर्रनायुडु हिंदी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्राध्यापक गण के अतिरिक्त हिंदी प्रेमी, हिंदी विद्वान, विभिन्न संस्थानों से जुड़े विद्वानों तथा अक्षरा के सदस्यों ने भी भाग लिया।

डॉ.पेरिसेट्टि श्रीनिवास राव

संस्थापक कार्यदर्शी तथा संगोष्ठी संयोजक

हिंदी अकादमी का पुरस्कार वितरण संपन्न

आंध्र प्रदेश हिंदी अकादमी, हैदराबाद के तत्वावधान में हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में अप्रैल, 2013 को आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह प्रतिष्ठित पद्मभूषण मोटूरि सत्यनारायण पुरस्कार ईमनि दयानंद को दिया गया। इसके तहत उन्हें एक लाख रुपये की राशि दी गयी।

गगन विहार स्थित आंध्र-प्रदेश हिंदी अकादमी सभागार में आयोजित समारोह में उपस्थित मुख्य अतिथि प्रदेश उच्च शिक्षा विभाग के मुख्य सचिव अजय मिश्र ने ईमनि दयानंद को पुरस्कार दिया। इसके अलावा हिंदी युवा लेखक पुरस्कार डॉ.नीरजा को, तमिल भाषी हिंदी लेखक पुरस्कार डॉ.ए.वी.सुरेश कुमार को, हिंदी भाषी हिंदी लेखक पुरस्कार शशिनारायण स्वाधीन को, उत्तम हिंदी अनुवाद पुरस्कार पारनंदि निर्मला को व मराठी भाषी हिंदी लेखक पुरस्कार श्रीनिवास सावरीकर को दिया गया। इन्हें भी अजय मिश्र ने पुरस्कृत करते हुए 25-25 हज़ार रुपये की राशि प्रदान की। कार्यक्रम की अध्यक्षता अकादमी के निदेशक डॉ.के.दिवाकर चारी ने की तथा मंच का संचालन अकादमी के अनुसंधान अधिकारी डॉ.बी.सत्यनारायण एवं पी.उज्जवला वाणी ने किया।

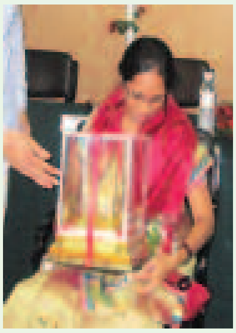

उल्लेखनीय है कि ईमनि दयानंद ने हिंदी और तेलुगु में लेखन कार्य किया है और इनकी रचनाओं में 'पत्थर भी गाते हैं', 'एकलव्य की मूक वेदना' आदि शामिल हैं। श्रीमती पारनंदि निर्मला ने आचार्य वकुला भरण रामकृष्णा की पुस्तक 'कन्दुकुरि विरेशलिंगम' का हिंदी में उत्तम अनुवाद किया है। डॉ.ए.वी.सुरेश कुमार ने अंग्रेज़ी उपन्यास 'लव स्टोरी' का 'प्रेम कहानी' के नाम से हिंदी में अनुवाद किया है। श्रीनिवास सावरीकर ने 'गुरू महिमा' को अंग्रेज़ी से मराठी में तथा यार्लगड्डा लक्ष्मीप्रसाद के तेलुगु उपन्यास 'द्रौपदी' का मराठी में अनुवाद किया है। डॉ.जी.नीरजा द्विभाषिक मासिक पत्रिका 'स्रवंति' में सह-संपादक हैं। शशिनारायण स्वाधीन ने 'सोच के गलीच पर', 'दस्तक का सच', 'कालजयी' इत्यादि पुस्तकें प्रकाशित की हैं। इस अवसर पर यात्रा विवरण लेखिका संपत देवी मुरारका द्वारा शशिनारायण स्वाधीन को 'यात्रा-क्रम - द्वितीय भाग' पुस्तक सादर भेंट किया गया एवं डॉ.जी.नीरजा को मुक्तामाला भेंट कर उनका भी सम्मान किया। इस अवसर पर टी.मोहन सिंह, मदन देवी पोकरणा, गोविन्द मिश्र, एवं अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

संपत देवी मुरारका की रिपोर्ट

न कोई ग़ालिब न तुलसीदास होगा

हिंदी काव्य की वाचिक परंपरा के उन्नायक एवं हिंदी भवन के संस्थापक पंडित गोपालप्रसाद की आठवीं पुण्यतिथि पर मंगलवार 28 मई, 2013 को भारत के हिंदी भवन सभागार में आयोजित 'काव्ययात्रा : कवि के मुख से' कार्यक्रम के अंतर्गत गीत, ग़ज़ल और लोकगीतों के वरिष्ठ व लोकप्रिय रचनाकार अंसार कम्बरी एवं प्रमोद तिवारी ने इस काव्य-संध्या में सभागार में उपस्थित सभी काव्य-प्रेमी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

समारोह के प्रारंभ में हिंदी भवन के मंत्री एवं वरिष्ठ व्यंग्य कवि डॉ.गोविन्द व्यास ने विशिष्ट अतिथि एवं आमंत्रित कवियों का संक्षिप्त परिचय देते हुए इस काव्य संध्या का संचालन आलोक श्रीवास्तव को सौंप दिया। इस काव्य संध्या को गरिमा प्रदान करते हुए प्रसिद्ध गीतकार प्रमोद तिवारी, वरिष्ठ ग़ज़लकार एवं गीतकार अंसार कम्बरी तथा आलोक श्रीवास्तव ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं।

इस काव्य संध्या में अनेक कवि, लेखक, पत्रकार और बुद्धिजीवी भारी संख्या में उपस्थित थे।

मधुकांत वत्स की रिपोर्ट

प्रतिक्रिया
विश्व हिंदी पत्रिका : 2012

मॉरीशस से प्रकाशित विश्व हिंदी पत्रिका साहित्य व भाषा दोनों ही दृष्टि से उपयोगी पत्रिका है। पत्रिका के समीक्षित अंक में जानकारीपरक, ज्ञानवर्धक व विकासोन्मुखी रचनाओं का सुंदर समन्वय है। अंक में विश्व में हिंदी के विविध आयाम के अंतर्गत संग्रह योग्य आलेखों का प्रकाशन किया गया है। इनमें शामिल हैं – विश्व मंच पर हिंदी (दामोदर खडसे), वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में समकालीन हिंदी कविता (अनुजा बेगम), वैश्विक हिंदी-एक परिदृश्य (विजया सती) के आलेख। अन्य प्रमुख लेखकों में अनिरुद्ध सिंह सेंगर, कामता कमलेश, ताकेशि फुजिइ, गेनादी श्लोम्पर, सुरेश चंद्र शुक्ल, संध्या सिंह, मुनीश शर्मा एवं इंद्रदेव भोला भी हैं। सभी आलेख हिंदी के वैश्विक स्वरूप से परिचय कराते हैं।

विदेशों में हिंदी के पथ प्रदर्शक के अंतर्गत प्रकाशित आलेखों में हिंदी के लिए विदेशों में कार्य कर रहे विद्वानों का विवरण व उनके परिश्रम से हिंदी की दशा का सार्थक वर्णन किया गया है। तीना जगू मोहेश, आशा मोर, कुमार परिमलेंदु सिन्हा, भावना सक्सेना, राकेश कुमार दुबे, उमेश चतुर्वेदी, सत्यदेव प्रीतम के लेख उल्लेखनीय हैं। तकनीक के क्षेत्र में हिंदी के बढ़ते कदम की व्याख्या करने के लिए समीक्षित अंक में अलग से खण्ड रखा गया है। इसके अंतर्गत सूचना प्रौद्योगिकी और देवनागरी लिपि (परमानंद पांचाल), तकनीकी युग में हिंदी का प्रचार (ललित कुमार) एवं हिंदी कम्प्यूटिंग : उपलब्धि और चुनौतियाँ (कविता वाचक्नवी) सहित एम.एल.गुप्ता एवं बालेन्दु शर्मा दाधीच के आलेख विशिष्ट हैं।

अन्य आलेखों में राजेन्द्र पी.सिंह, नीरज के. चतुर्वेदी, कौशल किशोर श्रीवास्तव, रणजीत साहा, अनीता गांगुली, अजय ओझा एवं रामकुमार वर्मा के आलेखों में नवीनता तथा विषयगत विविधता दिखाई देती है। विश्व हिंदी सम्मेलन पर रामदेव धुरंधर एवं वर्षिणी उधो सिंह के लेख ने पत्रिका को विश्व में हिंदी नव जानकारों के लिए उपयोगी बनाया है। इसके अतिरिक्त अंतर्राष्ट्रीय हिंदी कविता प्रतियोगिता 2011 के विजेताओं की कविताएँ प्रकाशित कर पत्रिका ने हिंदी कविता को अन्य विदेशी भाषाओं के समक्ष हिंदी में किये जा रहे प्रयोग व परिवर्तन को सामने लाने का सफ़ल प्रयास किया है। इस भाग में श्रीमती नीतू सिंह, वशिष्ठ कुमार झमन एवं कौशल किशोर श्रिवास्तव की कविताएँ शामिल की गई हैं। पत्रिका का स्वरूप, साज सज्जा, कलेवर तथा रचनाओं की सार्थकता इसे उपयोगी संग्रह योग्य बनाती है एवं पठनीयता प्रदान करती है। अच्छे अंक के लिए संपादन टीम तथा विश्व हिंदी सचिवालय बधाई के पात्र हैं।

कथा-चक्र.ब्लॉगस्पॉट से साभार

श्रद्धांजलि

प्रमुख हास्य व्यंग्य कवि दुर्गादत्त पाण्डेय का बेंगलूर में अचानक निधन हो गया। वे 58 वर्ष के थे। वे भारत के कई भागों में हास्य-व्यंग्य की अपनी रचनाओं से रसिक श्रोताओं को मोह चुके थे। व्यवसाय से व्यापारी दुर्गादत्त मूलत: हैदराबाद के थे, लेकिन कारोबार के सिलसिले में बेंगलूर चले गए थे। नगर की जेलों में वे कभी-कभार हास्य बिखेरने जाते थे, ताकि केंद्र में रहने वालों का भी मनोरंजन हो सके। उन्होंने 'मुस्कान' नाम की संस्था गठित करनी चाही थी, लेकिन किसी कारणवश इसमें सफ़ल नहीं हो पाये थे। वे हैदराबाद की संस्था 'दसरंग' के संयोजक भी रहे।

दुर्गादत्त पाण्डेय ने पिछले दो दशकों में हिंदी के अलावा दक्खनी शैली की शायरी में अपनी अलग पहचान बनाई थी। 'क्या होरा बाशा' और 'पानी बेचने वाला' उनकी लोकप्रिय रचनाएँ रहीं और सभी मंचों पर सराही गयीं। उनके निधन से साहित्यिक हलकों में शोक की लहर दौड़ गई। डॉ.अहिल्या मिश्र (संयोजिका ए.जी.आई. हैदराबाद चैप्टर एवं कादम्बिनी क्लब), मीना मूथा, संपत देवी मुरारका, ज्योति नारायण, अजित गुप्ता, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, पवित्रा अग्रवाल, डॉ.रमा द्विवेदी आदि ने उनको श्रद्धांजलि अर्पित की।

विश्व हिंदी सचिवालय व समस्त हिंदी जगत की ओर से श्री दुर्गादत्त पाण्डेय को श्रद्धांजलि।

हैदराबाद से डॉ. अहिल्या मिश्र की रिपोर्ट

महुआ घटवारिन को 19वां कथा यू.के. सम्मान

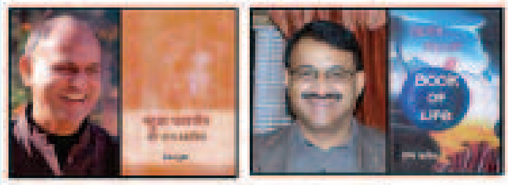

श्री कैलाश बुधवार ने लंदन से सूचित किया है कि इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय इंदु शर्मा कथा सम्मान (यू.के.), कथाकार श्री पंकज सुबीर को 2012 में उनके प्रकाशित कहानी संग्रह महुआ घटवारिन और अन्य कहानियों के लिए देने का निर्णय लिया गया है। इस वर्ष सम्मान के लिए केवल कहानी विधा पर ही ध्यान केंद्रित किया गया क्योंकि पिछले दो वर्षों में बहुत से स्तरीय कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं। पंकज सुबीर के अतिरिक्त अजय नावरिया, मनीषा कुलश्रेष्ठ, प्रेम भारद्वाज एवं विवेकानन्द के कहानी संग्रह अंतिम पाँच की दौड़ तक पहुँचे।

इंदु शर्मा मेमोरियल ट्रस्ट की स्थापना संभावनाशील कथा लेखिका एवं कवयित्री इंदु शर्मा की स्मृति में की गयी थी। अब तक यह प्रतिष्ठित सम्मान चित्रा मुद्गल, संजीव, ज्ञान चतुर्वेदी, एस. आर. हरनोट, विभूति नारायण राय, प्रमोद कुमार तिवारी, असग़र वजाहत, महुआ माजी, नासिरा शर्मा, भगवान दास मोरवाल, हृषिकेश सुलभ, विकास कुमार झा एवं प्रदीप सौरभ को प्रदान किया जा चुका है।

इस सम्मान के अन्तर्गत शील्ड व शॉल के अतिरिक्त विशेष रूप से दिल्ली-लंदन-दिल्ली का आने जाने का हवाई यात्रा का टिकट (एअर इंडिया द्वारा प्रायोजित) शामिल हैं। यह सम्मान श्री पंकज सुबीर को लंदन के हाउस ऑफ़ कॉमन्स में अक्टूबर के प्रथम सप्ताह में एक भव्य आयोजन में प्रदान किया जाएगा।

वर्ष 2013 के लिए पद्मानन्द साहित्य सम्मान बर्मिंघम के डॉ. कृष्ण कन्हैया को उनके कविता संग्रह 'किताब ज़िन्दगी की' (2012- वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली) के लिए दिया जा रहा है। इससे पूर्व इंग्लैंड के प्रतिष्ठित हिंदी लेखकों क्रमश: डॉ. सत्येन्द्र श्रीवास्तव, सुश्री दिव्या माथुर, श्री नरेश भारतीय, भारतेन्दु विमल, डॉ. अचला शर्मा, उषा राजे सक्सेना, गोविंद शर्मा, डॉ. गौतम सचदेव, उषा वर्मा, मोहन राणा, महेन्द्र दवेसर, कादम्बरी मेहरा, नीना पॉल एवं सोहन राही को पद्मानन्द साहित्य सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है।

कथा यू.के. परिवार विशेष रूप से श्रीमती चित्रा मुद्गल, श्री भारत भारद्वाज, श्रीमती उर्मिला शिरीष, श्रीमती सुधा ओम ढिंगरा, श्री सुशील सिद्धार्थ, श्रीमती साधना अग्रवाल एवं श्री आलोक मेहता का हार्दिक आभार मानते हुए उनके प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता है जिन्होंने इस वर्ष के पुरस्कार चयन के लिए लेखकों के नाम सुझा कर हमारा मार्गदर्शन किया।

तेजेन्द्र शर्मा

प्रतिक्रिया

आदरणीय महोदय,

विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा प्रकाशित विश्व हिंदी समाचार तथा विश्व हिंदी पत्रिका का मैं नियमित पाठक हूँ। ये पत्रिकाएँ बहुत लोकप्रिय हैं और विश्व के उन सभी देशों में ये पत्रिकाएँ जाती हैं जहाँ हिंदी के पाठक हैं। यदि मैं कह दूँ कि ये पत्रिकाएँ विश्व हिंदी दर्पण हैं तो अतिशयोक्ति नहीं होगी क्योंकि उन सभी देशों में हो रही हिंदी गतिविधियों के संक्षिप्त विवरण छपते हैं जिन्हें पढ़कर हम अवगत हो जाते हैं कि उन देशों में हिंदी में कौन सी गतिविधियों का आयोजन होता है, जैसे काव्य-गोष्ठियाँ, पुस्तक लोकार्पण, नाटक मंचन, नृत्य, गायन कार्यक्रम, हिंदी प्रकाशन, सम्मान, दिवंगत साहित्यकारों को श्रद्धांजलि, विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण आदि। ये पत्रिकाएँ रोचक समाचारों से भरपूर होती हैं। कुवैत, बहरीन, बेइजिंग, कोलम्बिया, जापान, रूस, ऑस्ट्रिया, अमेरिका आदि देशों में हिंदी शिक्षण, साहित्य-सृजन की जानकारियाँ पाकर हृदय गद्गद् हो जाता है। उनमें ऐसे कितने गैर-हिंदी भाषी साहित्यकार हैं जो सशक्त हिंदी रचनाएँ करने में सफ़ल व सक्षम हैं।

वस्तुत: विश्व हिंदी सचिवालय विश्व हिंदी समाचार और विश्व हिंदी पत्रिका के माध्यम से जहाँ विश्व के हिंदी साहित्यकारों के साहित्यिक विचारों के आदान-प्रदान का अवसर देता है वहाँ विश्व हिंदी साहित्य के सेतु के निर्माण व एकीकरण में अपूर्व सहयोग दे रहा है। इन पत्रिकाओं के संपादकों को विश्व के हिंदी समाचारों को इकट्ठे कर कुशल संपादन और प्रकाशन के लिए जितनी भी दाद दी जाए कम ही होगी।

इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ
प्रधान, हिंदी लेखक संघ, (मॉरीशस)

संपादकीय

सेतु निर्माण

विश्व हिंदी सचिवालय के त्रैमासिक सूचनापत्र के पूर्व अंकों के समान यह अंक भी विश्व की हिंदी और हिंदी के विश्व की गतिविधियों की सूचनाएँ आपके समक्ष लाया है। गतिविधियाँ जो निरंतर बढ़ रही हैं। उनकी सूचनाएँ भी। कुछ इस प्रकार कि हर नए अंक के साथ सूचनापत्र का फ़ॉण्ट-आकार छोटा करना पड़ रहा है ताकि आपके द्वारा भेजी गई अधिक से अधिक सूचनाएँ इसमें समाहित हो पाएँ।

इस अंक की खबरों में से एक खबर विशेष रूप से ध्यान आकर्षित करती है। वह है मॉरीशस के पड़ोसी रियूनियन टापू में हिंदी-शिक्षण के लिए मॉरीशस के शिक्षा मंत्रालय की सरपरस्ती में महात्मा गांधी संस्थान और सें देनी नगरपालिका के बीच सन्धि। यह पहल वैश्विक स्तर पर अथवा विश्व भाषा हिंदी के समक्ष खड़ी एक महत्वपूर्ण चुनौती की ओर इंगित करती है जिसपर हिंदी के सभी शुभचिंतकों द्वारा विचार अनिवार्य हो गया है। वह है-एक वैश्विक भाषा के रूप में हिंदी के लिए अनिवार्य लक्षणों की।

विश्व में अंग्रेज़ी के बढ़ते वर्चस्व तथा बोलने वालों की संख्या की दृष्टि से कुछ कमज़ोर भाषाओं के समक्ष संकट के बावजूद यदि तटस्थता के साथ आज वैश्विक भाषा मानचित्र का आकलन करें तो दिखेगा कि आज अधिकतर देशों के बहुसंख्यक नागरिकों के लिए 'अपनी' भाषा अपनी पहचान का अहम हिस्सा है जिसके लिए वे सचेत और सक्रिय होकर प्रयत्न और संघर्ष तक कर रहे हैं। इस प्रकार के उदाहरण आपको विश्व भर में मिलेंगे। अंग्रेज़ी, स्पैनिश, फ्रेंच आदि भाषाओं के बढ़ते प्रसार के समानान्तर स्वभाषा के प्रति चेतना की यह विरोधाभास की स्थिति इस ओर इशारा कर रही है कि आज का विश्वनागरिक बहुभाषी है और अधिक से अधिक होता जाएगा। मातृभाषा के अतिरिक्त आज के विश्वनागरिक के जीवन में भाषा 2 (जिसमें एक साथ कई भाषाएँ आ सकती हैं) और उसी प्रकार विदेशी भाषा के लिए भी स्थान बन रहा है।

इसका सटीक प्रमाण अंग्रेज़ी की स्थिति पर एक सरल प्रश्न के साथ प्राप्त हो जाता है कि 'आज दुनिया में अंग्रेज़ी बोलने वाली सम्पूर्ण आबादी में कितने लोगों के लिए अंग्रेज़ी मातृ भाषा है?' आप इस का उत्तर किसी भी सूत्र से लाएँ, आपको यही मिलेगा कि उस कुल संख्या का कम से कम आधा हिस्सा ऐसे लोगों का है जिनके लिए अंग्रेज़ी भाषा 2 अथवा विदेशी भाषा है। फ्रेंच, स्पैनिश, अरबी आदि का बढ़ता वैश्विक प्रसार इसी प्रक्रिया की देन है।

इस उभरती स्थिति से यह शंका दूर होती है कि दुनिया एक भाषा-भाषी हो जाएगी और दूसरा यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इस एक विश्व के अंतर्गत अनेक भाषा संसारों की सीमा रेखाएँ पूरी तटस्थता के साथ स्थापित होंगी लेकिन यह भी होगा कि उन भाषा संसार में एक आक्रामकता-विहीन प्रवृत्ति के साथ प्रवेश की संभावनाएँ भी बढ़ेंगी। ऐसी स्थिति में विश्व भाषा होने का एक प्रमुख लक्षण होगा - एक भाषा में अपने भाषा संसार से दूसरे भाषा संसार के बीच सेतु-निर्माण करने की क्षमता। एक भाषा में 'भाषा 2' तथा 'विदेशी भाषा' के रूप में स्वयं को अनिवार्य-तुल्य बनाने की क्षमता।

इस दृष्टि से देखें तो हिंदी के लिए अभी कई और संसार जीतने हैं। अनेक सेतुओं का निर्माण बाकी है। अंग्रेज़ी भाषा संसार में प्रवेश के सेतु बन रहे हैं। फ्रेंच, स्पैनिश, मैंडरीन और अरबी भाषा-भाषियों के संसार में प्रवेश के लिए सेतु निर्माण कटिबद्ध होकर सुदृढ़ करना है।

इस कार्य में योगदान होता है भाषा की आंतरिक शक्तियों का, भाषा से जुड़े देश और समुदाय की शक्तियों का और भाषा प्रचारक संस्थाओं और व्यक्तियों के विशेष समंवयक गुणों का। हिंदी का समृद्ध इतिहास, उसका अतुल्य साहित्य, उसकी वैज्ञानिकता पहली श्रेणी की शक्तियों में हैं तो भारत की सांस्कृतिक विरासतें, भारत का उभरता शक्तिशाली अर्थतन्त्र और हिंदी सिनेमा दूसरी श्रेणी की कुछ महत्वपूर्ण शक्तियाँ हैं।

तीसरी शक्ति के प्रमाण हमको भारत के इतिहास में हिंदी को भारतवर्ष की भाषा के रूप में स्थापित करने का प्रयास करने वाले गांधी, दयानंद जैसे असंख्य व्यक्तियों के रूप में मिलते हैं जिन्होंने अन्य भाषा समुदाय का होते हुए भी हिंदी की सार्वदेशिक स्विकृति के लिए कार्य किये अथवा उन भारतीय व विश्वव्यापी संस्थाओं के रूप में मिलते हैं जो अहिंदी भाषी क्षेत्रों में स्थापित होकर हिंदी प्रचार कर रही हैं।

फ्रेंच भाषी संसार में हिंदी के शिक्षण व प्रचार कार्य में अपनी ऐतिहासिक पहल के साथ महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस सरकार और सम्पूर्ण मॉरीशसीय हिंदी समुदाय ने अपने लिए तीसरी श्रेणी की शक्तियों में एक महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। यह पहल फ्रेंच भाषी संसार में हिंदी के प्रवेश के लिए मॉरीशस में किये गए अन्य अनेक प्रयासों की स्वाभाविक परिणति है। इस देश में, जिसकी जनता के लिए बहुभाषीयता एक स्वाभाविक गुण है, फ्रेंच माध्यम से हिंदी शिक्षण की भरपूर योग्यता है ही, फ्रेंच और हिंदी के साहित्य परस्पर अनुवाद करने की एक लम्बी व स्थापित परम्परा भी है। बासदेव बिसुनदयाल, सोमदत्त बखोरी, अश्लेखा कालिकाँ-प्रोआग, केशन बधु, राजरानी गोबिन, विजय कुमार बिहारी जैसे अनेक नाम हैं जिनके द्वारा रचनात्मक साहित्य अनुवाद से लेकर रामायण और गीता तक का फ्रेंच रूपांतर और द्विभाषी कोश निर्माण भी किया जा चुका है। इसी इतिहास के आधार पर एक हिंदी प्रचारक देश के रूप में मॉरीशस हिंदी और फ्रेंच भाषी संसार के बीच सेतु निर्माण के कार्य में एक महत्वपूर्ण चरण पार कर रहा है। इस कार्य में विश्व हिंदी समुदाय की शुभकामनाएँ।

यहाँ से आगे चुनौतियाँ और होंगी।

उन चुनौतियों में एक महत्वपूर्ण चुनौती होगी भाषा 2 अथवा विदेशी भाषा के रूप में हिंदी सीख रहे लोगों द्वारा हिंदी की ध्वनियों, शैलियों और प्रतीकों तक में लायी जाने वाली असमानताओं को स्वीकारने की। यह स्वीकारने की कि 'विश्व भाषा' हिंदी, हिंदुस्तानी आदि किसी एक घर, एक रूप, एक शैली, में बंद नहीं रह सकती। वैसा बने रहकर कोई भी भाषा वैश्विक नहीं बनी न बन सकेगी।

भाषा को अपने मापदण्डों में बान्ध कर उसको 'विश्व की भाषा' बनाने पर भाषण देने वाले अपने पजामे का नाड़ा जितनी लम्बी डोर से पतंग को बादलों तक पहुँचाने का सपना देखते रहेंगे। जो पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर सेतु-निर्माण के उद्देश्य से आगे बढ़ेंगे, वे पिघलाएँगे सीमाओं को, और खींच-तान कर बनाएँगे उससे तारें अटूट, जिनपर पसरेगा ज्ञान का आधारह्र इस पार से उस पारह्र

गंगाधरसिंह सुखलाल 'गुलशन'
कार्यवाहक महासचिव

प्रधान संपादक
श्री गंगाधरसिंह सुखलाल
संपादन सहयोग
श्री जिष्णु होरिशरण, सुश्री श्रद्धांजलि हजगैबी,
श्रीमती विजया सरजु, श्रीमती प्रीति नहुला, सुश्री वर्षा गोवर्धन
विश्व हिंदी सचिवालय
स्विफ्ट लेन, फ़ॉरेस्ट साइड, मॉरीशस

World Hindi Secretariat
Swift Lane, Forest Side, Mauritius
Phone (230) 676 1196
Fax (230) 676 1224
Email : info@vishwahindi.com
Website : www.vishwahindi.com

Printed by
BAHADOOR PRINTING LTD.
Avenue St. Vincent de Paul – Pailles
Tel: 208 1317